तापमान

अधिकतम 22.0 डिग्री
न्यूनतम 9.7 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि

रोहतक, रविवार, 21 दिसंबर 2025

11 नेशनल आर्चरी में खिलाड़ियों ने जीते पदक

12 सड़क हादसे ने ले ली 7 माह की गर्भवती की जान

खबर संक्षेप

बाइक की टक्कर में स्कूटी सवार घायल

गन्नौर। जीटी रोड पर बड़ी गांव के पास तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से स्कूटी चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को उपचार के लिए पानीपत के निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। घायल पत्नी ने मामले की शिकायत थाना बड़ी में दी। शिकायत में सीमा निवासी विकास नगर, एनएफएल, पानीपत ने बताया कि उसका पति विपिन बड़ी औद्योगिक क्षेत्र एक फैक्ट्री में बतौर गाड़ी चालक का कार्य करता है।18 दिसंबर को वह अपनी स्कूटी से किसी जरुरी कार्य से कंपनी से गांव बड़ी की तरफ जा रहा था। इस दौरान एक तेज रफ्तार बाइक चालक ने सीधी टक्कर उसके पति की स्कूटी में मार दी।

ट्रैक्टर चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

सोनीपत। थाना सदर सोनीपत की पुलिस ने गली में खड़े ट्रैक्टर को चोरी करने की घटना में संलिप्त आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित विशाल निवासी संत कबीर नगर यूपी, हाल गोविन्द नगर सोनीपत का रहने वाला है। विकास पुत्र सतबीर निवासी गांव खेवडा ने थाना सदर सोनीपत में शिकायत दी कि 18 दिसंबर को वह अपने ट्रैक्टर को लेकर अपने घर से अनाज मण्डी जा रहा था। इस दौरान ट्रैक्टर के साथ-2 दो नौजवान लड़के भी मोटरसाईकिल को आगे-पीछे करके घुमा रहे थे। उसने ट्रैक्टर को गली के साईड में खड़ा करके किसी काम से थोडी देर के लिए चला गया था। कुछ समय बाद आकर देखा तो उसका ट्रैक्टर वहां से गायब था।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर किया जागरूक

गोहाना। सेक्टर-7 स्थित द विज्डम स्कूल में शनिवार को पर्यावरण संरक्षण विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छोटे बच्चों में पर्यावरण एवं प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने प्रकृति, वन अधिनियम, पंच भूतम और पेड़ों की वेशभूषा में अपनी प्रस्तुति देकर प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मार्गदर्शन स्कूल के एमडी राजबीर राठी और प्रबंधक उत्तम राठी का रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल की मुख्याध्यापिका रेनू नासा ने की। उन्होंने कहा कि प्रकृति हम सब की पालक है।

कोहरे के कारण वाहनों के पहियों पर लगे ब्रेक

कोल्ड डे : पांच मीटर की दृश्यता में निकला दिन, हवाओं ने कंपकंपाया

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

जिले में शनिवार को मौसम ने अपने विकराल रूप के दर्शन करवा दिए। तड़के से छाए घने कोहरे और दिनभर चली शीतलहर ने जनजीवन की रफ्तार थाम दी। सूर्य देव के दर्शन न होने और बर्फीली हवाओं के चलने से लोग दिनभर ठिठुरते नजर आए। शनिवार सुबह सात बजे दृश्यता का स्तर गिरकर मात्र पांच मीटर रह गया था जिसने सड़क यातायात को बुरी तरह प्रभावित किया। शनिवार की शुरुआत घने कोहरे की चादर के साथ हुई। सुबह सात बजे विजिबिलिटी शून्य के करीब पहुंचने से वाहनों के पहिए थम गए। आठ बजे तक स्थिति में मामूली सुधार हुआ और दृश्यता 20 मीटर दर्ज की गई। सुबह दस बजे भी राहत नहीं मिली और दृश्यता 50 मीटर के आसपास ही बनी रही। दोपहर 12 बजे के बाद शीतलहर का प्रकोप बढ़ने से कोहरा कुछ कम तो हुआ लेकिन बादलों और धुंध की ओट में छिपे सूरज ने पूरे दिन दर्शन नहीं दिए। वहीं मौसम विशेषज्ञों के अनुसार एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने की अनुमान है, जिसके चलते 22 दिसम्बर के आसपास हल्की बूंदाबांदी भी हो सकती है।

अधिकतम तापमान में 4 डिग्री तो न्यूनतम तापमान में 3.7 डिग्री सेल्सियस की आई कमी

तापमान में आई गिरावट

तापमान के आंकड़ों पर गौर करें तो जगदीशपुर केंद्र पर अधिकतम तापमान 18.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया जबकि न्यूनतम तापमान 6 डिग्री सेल्सियस रहा। वहीं शुक्रवार को जिले का अधिकतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इस तरह से अधिकतम तापमान में 4 तो न्यूनतम तापमान में 3.7 डिग्री की कमी दर्ज की गई है। दिनभर तीन किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चली ठंडी हवाओं ने कंपकंपी बढ़ा दी। इसके साथ ही वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई 299 दर्ज किया गया जो खराब श्रेणी में आता है। प्रदूषण और ठंड के इस मिश्रण ने लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

हाईवे पर ये नजारा...

गेहूं के लिए फायदा, सरसों व सब्जी को नुकसान

मौसम का यह बदलता मिजाज खेती किसानी के लिए मिश्रित परिणाम लेकर आया है। कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान में छाई धुंध और गिरता तापमान रबी की फसलों विशेषकर गेहूं के लिए काफी फायदेमंद है। कम तापमान से गेहूं की फसल में फुटाव अच्छा होता है जिससे पैदावार बढ़ने की उम्मीद रहती है। हालांकि विशेषज्ञों ने सब्जियों और सरसों की खेती करने वाले किसानों को आगाह किया है। लगातार घना कोहरा रहने और धूप न निकलने से आलू में झुलसा रोग का खतरा बढ़ जाता है। वहीं अगर आने वाले दिनों में हवा की गति और कम होती है तथा आसमान साफ होता है तो पाला गिरने की संभावना प्रबल हो जाएगी। किसानों को सलाह दी गई है कि वे अपनी फसलों में हल्की सिंचाई करते रहें और पाले से बचाव के लिए खेतों की मेड़ों पर शाम के समय धुआं करें। सब्जियों की नर्सरी को ढककर रखने की भी हिदायत दी गई है।

कोहरे और इंटरलॉकिंग कार्यों ने बिगाड़ा रेल संचालन

सोनीपत। दिल्ली-अंबाला रेल रूट पर शनिवार को कोहरे के साथ-साथ पंजाब और गाजियाबाद में चल रहे इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग कार्यों का असर रेल परिचालन पर साफ नजर आया। हालात ऐसे रहे कि दर्जनभर से अधिक एक्सप्रेस और सुपरफास्ट ट्रेनें अपने निर्धारित समय से कई घंटे देरी से सोनीपत पहुंचीं। लंबी दूरी की ट्रेनों के लेट होने का सीधा असर सवारी गाड़ियों पर भी पड़ा, जिससे यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा।जानकारी के अनुसार पंजाब के अमृतसर और फिरोजपुर मंडल तथा गाजियाबाद क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग कार्य चल रहा है। इसके साथ ही घने कोहरे के कारण अप और डाउन दोनों लाइनों पर ट्रेनों की रफ्तार सीमित करनी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि दिल्ली-अंबाला रूट पर चलने वाली एक्सप्रेस ट्रेनें शनिवार को पौने 10 घंटे तक की देरी से सोनीपत स्टेशन पर पहुंचीं।

ये ट्रेन रही प्रभावित

दिल्ली-अंबाला रूट पर चलने वाली आम्रपाली एक्सप्रेस करीब 9 घंटे 50 मिनट, ऊंचाहार एक्सप्रेस 9 घंटे 40 मिनट, दादर एक्सप्रेस 5 घंटे 5 मिनट, मालवा एक्सप्रेस 4 घंटे 20 मिनट, गीता जयंती एक्सप्रेस 4 घंटे 31 मिनट, शान-ए-पंजाब एक्सप्रेस 3 घंटे 35 मिनट, कालका शताब्दी एक्सप्रेस 3 घंटे, बठिंडा एक्सप्रेस 3 घंटे 15 मिनट, पश्चिम एक्सप्रेस 2 घंटे और अमृतसर इंटरसिटी एक्सप्रेस 1 घंटे 30 मिनट की देरी से सोनीपत पहुंची। इसके अलावा 64465 सवारी गाड़ी 2 घंटे 35 मिनट और 64531 सवारी गाड़ी 1 घंटे 10 मिनट लेट रही।वहीं अंबाला-दिल्ली रूट पर भी स्थिति कम गंभीर नहीं रही। इस रूट पर पश्चिम एक्सप्रेस 4 घंटे, दिल्ली सुपरफास्ट एक्सप्रेस 4 घंटे 10 मिनट, जम्मू मेल 1 घंटे 50 मिनट, इंटरसिटी एक्सप्रेस 2 घंटे 25 मिनट, नेताजी एक्सप्रेस 2 घंटे 18 मिनट, हिमाचल एक्सप्रेस 2 घंटे 20 मिनट और टाटानगर एक्सप्रेस 3 घंटे 2 मिनट की देरी से पहुंची। झेलम एक्सप्रेस, बठिंडा एक्सप्रेस और दादर एक्सप्रेस भी डेढ़ से ढाई घंटे तक लेट रहीं।

दो दिन से लापता बारहवीं की छात्रा का शव हरिद्वार में मिला

18 दिसंबर को सुबह 10 बजे घर से निकली थी छात्रा

सोनीपत पुलिस शव लेने हरिद्वार जाएगी

सोनीपत। शहर से लापता हुई 17 वर्षीय छात्रा का शव उत्तराखंड के हरिद्वार स्थित कनखल क्षेत्र में नदी से बरामद हुआ है। स्थानीय पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। किशोरी के लापता होने की प्राथमिकी सेक्टर-27 थाना में दर्ज है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। सोनीपत से छात्रा 18 दिसंबर से लापता थी। परिजनों ने तलाश की तो पता नहीं लग सका।

घर में अकेली थी

उन्होंने सेक्टर-27 थाना पुलिस को शिकायत देकर प्राथमिकी दर्ज करा दी। छात्रा के परिजनों ने बताया कि उनके पिता निजी कंपनी में कार्यरत है। छात्रा देवडू रोड स्थित स्कूल में 12वीं कक्षा की छात्रा थी। स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ वह सेक्टर-14 स्थित एक कोचिंग संस्थान में भी जाती थी। परिजनों के अनुसार 18 दिसंबर को छात्रा घर पर अकेली थी। सुबह करीब 10 बजे वह बिना किसी को बताए घर से निकली थी, लेकिन देर शाम तक भी वापस नहीं लौटी। रिश्तेदारों, परिचितों और छात्रा की सहेलियों के यहां उसकी तलाश की, लेकिन कहीं से कोई जानकारी नहीं मिल सकी।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट व अन्य तथ्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ाएंगे

जिला पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य तथ्यों के आधार पर जांच की जाएगी। सोनीपत पुलिस हरिद्वार जाएगी और जांच करेगी। थाना प्रभारी सविंत ने बताया कि शव मिलने की जानकारी मिली थी। पुलिस जांच कर रही है। जल्द ही मामले में पूछताछ कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

साइबर ठगों ने खातों से पैसे निकाले, केस दर्ज

दो लोगों से 5.40 लाख की ठगी

ई-चालान का एक लिंक क्लिक करते ही मोबाइल हैक हो गया

सोनीपत। ई-चालान के नाम पर फर्जी लिंक भेजकर और शेयर मार्केट में मोटी कमाई का लालच देकर ठगों ने दो लोगों से करीब 5.40 लाख रुपये की ठगी कर ली। दोनों मामलों में पीड़ितों ने साइबर क्राइम थाना सोनीपत में प्राथमिकी दर्ज कराई है।गांव गढ़ी सिसाना निवासी रविंदर ने प्राथमिकी दर्ज कराई है कि 12 दिसंबर को उनके मोबाइल पर ई-चालान का एक लिंक आया। उन्होंने लिंक पर क्लिक किया तो उनका मोबाइल हैक हो गया और इनकमिंग कॉल व मैसेज बंद हो गए। इसके बाद 13 से 15 दिसंबर के बीच उनके बैंक खाते से अलग-अलग ट्रांजैक्शन के जरिए 1.90 लाख रुपये निकाल लिए गए। बाद में पता चला कि ठगों ने फर्जी वेबसाइट और फर्जी दस्तावेजों के आधार पर खुले खातों में यह रकम ट्रांसफर की है। ठगी का अहसास होते ही पीड़ित ने 1930 पर शिकायत दर्ज कराई। जिस पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। ई-चालान का लिंक भेजकर तीन दिन में ठगी का यह दूसरा मामला सामने आया है।

शेयर ट्रेडिंग में मुनाफे का लालच 3.50 लाख रुपये की चपत

सेक्टर-15 सोनीपत निवासी यादविंद्र ने प्राथमिकी दर्ज कराई हैं कि 25 सितंबर को उन्हें शेयर मार्केट में निवेश कर भारी मुनाफा कमाने का कॉल आया। इसके बाद उन्हें व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया और मोबाइल में एप डाउनलोड करवाया गया। ठगों ने इंस्टीट्यूशनल, ओटीसी और आईपीओ निवेश पर 20 से 200 फीसदी तक मुनाफे का लालच दिया। भरोसा कर यादविंद्र सिंह ने अलग-अलग तारीखों में विभिन्न यूपीआई आईडी पर कुल 3.50 लाख रुपये ट्रांसफर कर दिए। जब उन्होंने रकम निकालने की कोशिश की तो संपर्क बंद कर दिया गया। तब उन्हें ठगी का पता लगा।साइबर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर बसंत ने कहा कि लोग किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक न करें और शेयर ट्रेडिंग या निवेश के नाम पर आने वाले कॉल, एप और व्हाट्सप ग्रुप से दूरी बनाए रखें। साइबर ठगी से बचाव के लिये जागरूकता ही हथियार है।

रेलवे स्टेशन परिसर में कचरे के ढेर से मिले 5, 10, 20 और 50 रुपये के सैकड़ों फटे नोट

सोनीपत। रेलवे स्टेशन परिसर में शनिवार को उस समय अफरा-तफरी का माहौल बन गया, जब गुड़ मंडी की ओर कचरे के एक ढेर में बड़ी संख्या में फटे और पुराने नोट पड़े मिले। कचरे में नोट दिखाई देने की सूचना फैलते ही मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। नोटों में 5, 10, 20 और 50 रुपये के शामिल थे, जो काफी हद तक क्षतिग्रस्त अवस्था में थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार स्टेशन परिसर के पास पड़े कचरे के ढेर में अचानक नोट दिखाई दिए, जिसके बाद लोगों में उत्सुकता बढ़ गई और कई लोग वहां एकत्र हो गए। मामले की गंभीरता को देखते हुए इसकी सूचना तुरंत राजकीय रेलवे पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही जीआरपी की टीम मौके पर पहुंची और स्थिति को संभालते हुए लोगों को वहां से हटाया गया। जीआरपी ने मौके पर पड़े सभी फटे-पुराने नोटों को सावधानीपूर्वक एकत्र किया। नोटों को दो थैलियों में भरकर मालखाना में सुरक्षित जमा करवा दिया गया है। पुलिस ने आसपास के क्षेत्र का भी निरीक्षण किया, ताकि यह पता लगाया जा सके कि नोट वहां कैसे पहुंचे और किसके द्वारा फेंके गए। जीआरपी थाना के जांच अधिकारी एएसआई अजय कुमार ने बताया कि सुबह करीब साढ़े 9 बजे रेलवे स्टेशन परिसर में कचरे के ढेर में फटे नोट पड़े होने की सूचना मिली थी।

- नोटों को देखने के लिए भीड़ जुट गई
- जीआरपी ने करंसी को कब्जे में लिया

करंसी नोट मिलना गंभीर मामला

थाना प्रभारी जीआरपी धर्मपाल ने बताया कि करंसी नोटों का कचरे में मिलना सामान्य बात नहीं है। हालांकि नोट अत्यधिक फटे हुए हैं, फिर भी सभी को सुरक्षित तरीके से मालखाना में जमा करा दिया गया है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि नोट कचरे तक कैसे पहुंचे, किसने इन्हें फेंका और कहीं इनका संबंध किसी आपराधिक गतिविधि, धोखाधड़ी या अन्य मामले से तो नहीं है।

शहर में दिनभर होती रही चर्चा

प्रारंभिक जांच में नोट चूहों द्वारा कुतरे हुए प्रतीत हो रहे हैं, जिससे आशंका जताई जा रही है कि ये नोट किसी पुराने भंडारण स्थल या कूड़े के साथ यहां पहुंचे होंगे। हालांकि पुलिस का कहना है कि नोटों की वास्तविक स्थिति और उनके यहां मिलने के कारणों की पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही की जा सकेगी। फिलहाल रेलवे स्टेशन परिसर में कचरे के ढेर में मिले फटे-पुराने नोट लोगों के बीच चर्चा का विषय बने हुए हैं। कई लोग इसे लेकर तरह-तरह की अटकलें लगा रहे हैं। जीआरपी ने स्पष्ट किया है कि मामले की पूरी जांच की जा रही है और यदि किसी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि सामने आती है, तो आगे की कार्रवाई नियमानुसार की जाएगी।

निवेश लिए अगले साल लें स्मार्ट फैसला, तभी कर पाएंगे कमाई

मल्टी-एसेट में मिलेगा बढ़िया रिटर्न

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- इस साल 2025 में गोल्ड और सिल्वर में रही मजबूत रैली
- बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश न करें
- बेहतर है लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं
- जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सकेगा
- शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय अनुशासन व लंबी अवधि पर करें फोकस

साल 2025 वैश्विक और घरेलू स्तर पर निवेशकों के लिए उतार-चढ़ाव भरा रहा है। टैरिफ, जियो-पॉलिटिकल टेंशन, जीएसटी सुधार और आईपीओ की बढ़ती गतिविधियों के बीच शेयर बाजार लंबे समय तक सीमित दायरे में घूमता रहा। हालांकि साल के दूसरे हिस्से में बाजार में धीरे-धीरे सुधार के संकेत दिखने लगे। इसी दौरान 2 एसेट क्लास सोना और चांदी ने निवेशकों को सबसे ज्यादा अट्रैक्ट किया। जहां सोने ने इस कैलेंडर ईयर में अबतक 63% रिटर्न दिया, वहीं चांदी ने 100% से ज्यादा की तेजी दिखाई, जिससे निवेशकों की दिलचस्पी एक बार फिर वैकल्पिक एसेट्स की ओर बढ़ी। बीते रिटर्न को देखकर निवेश करना अक्सर गलत फैसलों की वजह बनता है। तेजी के बाद निवेश करने का ट्रेंड, जिसे रिटर्न के पीछे भागना" कहा जाता है, लंबे समय में नुकसान भी पहुंचा सकती है। ऐसे माहौल में विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने के बजाय निवेशकों को लंबी अवधि की सोच, अनुशासन और मल्टी-एसेट डायवर्सिफिकेशन पर ध्यान देना चाहिए। अलग-अलग एसेट क्लास में संतुलित निवेश न सिर्फ रिस्क को कम करता है, बल्कि समय के साथ कंपाउंडिंग के जरिए बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखता है।

रिटर्न के पीछे भागना गलत स्ट्रैटेजी

लॉन्ग टर्म रिटर्न चार्ट देखें तो पता चलेगा कि सोने में निवेशकों का इंटरेस्ट तब तेजी से बढ़ता है, जब इसके रिटर्न तेजी से बढ़ने लगते हैं, लेकिन जैसे ही कीमतें गिरती हैं, यह इंटरेस्ट भी कम हो जाता है। यह प्रतिक्रिया पर आधारित तरीका साफ बताता है कि निवेश में अनुशासन और निरंतरता कितनी जरूरी है। बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, निवेशकों के लिए बेहतर है कि वे लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं, जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सके। इसे अपनाने का एक असरदार तरीका है आउटसोर्स्ड एसेट एलोकेशन, यानी ऐसे फंड्स में निवेश करना जो अलग-अलग एसेट क्लास में अपने आप निवेश को संतुलित करते हैं।

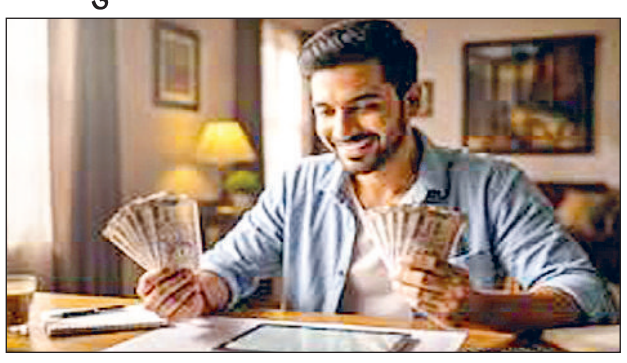

क्यों जरूरी है डायवर्सिफिकेशन

सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास के पीछे भागना, चाहे तेजी के समय शेयर हों या गिरावट के समय सोना, अक्सर गलत समय पर निवेश करने और बाजार के अधिक उतार-चढ़ाव का जोखिम बढ़ा देता है। डायवर्सिफिकेशन इन जोखिम को कम करता है, क्योंकि इसमें पैसा अलग-अलग एसेट्स में लगाया जाता है जो अलग परिस्थितियों में अलग तरह से व्यवहार करते हैं। लेकिन अब यह ट्रेंड फिर से बदल रहा है। जून 2024 से, बाजार ने एक बार फिर तेज ग्रोथ और अच्छी क्वालिटी वाली कंपनियों को बेहतर रिटर्न देना शुरू कर दिया है। इन कंपनियों ने अप्रैल 2023 से मई 2024 के दौरान हुए अपने खराब प्रदर्शन का एक-चौथाई से ज्यादा हिस्सा वापस हासिल कर लिया है। इसलिए निवेशकों को शेयरों में भी अलग-अलग स्टाइल में निवेश करके पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करना चाहिए।

समझदारी दिखाएं

आज की दुनिया में, जहां बदलाव लगातार हो रहा है, समझदारी से किया गया डायवर्सिफिकेशन एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाने के लिए सिर्फ अच्छा नहीं, बल्कि बहुत जरूरी है। निवेशकों को शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय संतुलन, अनुशासन और लंबी अवधि की रणनीति पर ध्यान देना चाहिए। इसलिए, अलग-अलग एसेट्स में डायवर्सिफाइड मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो को जोखिम और रिटर्न के सही संतुलन में मदद करने दें, ताकि समय के साथ कंपाउंडिंग अपना कमाल दिखा सके।

प्रमुख एसेट क्लास और उनका व्यवहार

आज के आपस में जुड़े हुए और उतार-चढ़ाव भरे ग्लोबल वित्तीय माहौल में, सिर्फ एक ही एसेट क्लास पर भरोसा करना निवेशकों के लिए बेवजह का जोखिम पैदा कर सकता है, चाहे उसने हाल ही में कितना भी अच्छा प्रदर्शन क्यों न किया हो। इस समय मुख्य एसेट क्लास किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं।

सोना और चांदी

ये कीमती धातुएं पारंपरिक रूप से सुरक्षित निवेश मानी जाती हैं। महंगाई के समय या जब सामान्य करेंसी (फिएट करेंसी) कमजोर होती है, तब ये अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। चांदी का इस्तेमाल इंडस्ट्री में भी होता है, इसलिए यह इकोनॉमिक साइकिल से ज्यादा प्रभावित होती है। इससे इसमें उतार-चढ़ाव भी ज्यादा होता है, लेकिन मौके भी मिलते हैं।

शेयर (इक्विटी)

शेयरों में बढ़त की अच्छी संभावना होती है, खासकर उन क्षेत्रों में जो नई तकनीक और इनोवेशन से जुड़े होते हैं, लेकिन ये ब्याज दरों, कंपनियों की कमाई के अनुमान और आर्थिक बदलावों के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं। अलग-अलग देशों और इंडस्ट्री में इनका प्रदर्शन काफी अलग हो सकता है।

फिक्स्ड इनकम (बॉन्ड)

बॉन्ड अपेक्षाकृत स्थिरता और फिक्स्ड इनकम देते हैं। हालांकि ब्याज दरें बढ़ने पर बॉन्ड की कीमतों पर दबाव आ सकता है, फिर भी ये जोखिम कम करने और पूंजी को सुरक्षित रखने के लिए बहुत जरूरी होते हैं। खासकर सतर्क निवेशकों या रिटायरमेंट के करीब लोगों के लिए ये काफी उपयोगी हैं।

रियल एसेट्स और वैकल्पिक निवेश

रियल एस्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर और कमोडिटीज महंगाई से बचाव करने और निवेश में डाइवर्सिफिकेशन लाने में मदद कर सकते हैं। वहीं, प्राइवेट इक्विटी और हेज फंड जैसे वैकल्पिक निवेश रिटर्न बढ़ा सकते हैं, लेकिन इनमें जोखिम अधिक होता है और पैसा जल्दी निकालना आसान नहीं होता।

(डिस्क्लेमर : यह आर्टिकल ब्रोकरेज हाउस की रिपोर्ट के आधार पर जानकारी के उद्देश्य से दिया है। यह फाइनेंशियल एक्सप्रेस के निजी विचार नहीं हैं। किसी कैटेगरी में निवेश की सलाह ब्रोकरेज हाउस के द्वारा दी गई है। बाजार में जोखिम होते हैं, इसलिए निवेश के पहले एक्सपर्ट की सलाह लें।)

विदेश घूमने का है प्लान तो ट्रैवल इंश्योरेंस लेते समय न करें गलतियां

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी विदेश में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो कुछ सावधानियां बरतें और विदेश जाने से पहले ट्रैवल इंश्योरेंस की बारीकियों को अच्छे से समझ लें, ताकि कवरेज, सब-लिमिट या बीमारी छिपाने जैसी गलती से आपका क्लेम अटके नहीं। वरना आपको इससे भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। अक्सर विदेश घूमने की प्लानिंग में फ्लाइट, होटल, घूमने-फिरने की जगहें सब कुछ सोच लिया जाता है, लेकिन ज्यादातर लोग इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस को हल्के में ले लेते हैं, जबकि बाहर कुछ अनहोनी हो जाए तो यही इंश्योरेंस बड़ा सहारा बन सकता है। जानकारों का कहना है कि भारतीय यात्री अक्सर कुछ आम गलतियां कर बैठते हैं, जिनसे बाद में भारी नुकसान हो सकता है। इसलिए कभी भी विदेश घूने के लिए जाएं तो इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस के बारे में अच्छे से जान लें। इससे आप आसानी से बिना किसी चिंता के विदेश घूम सकेंगे। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ नियम जो आपको विदेश जाने के दौरान होने वाली परेशानियां से बचाएंगे और सुरक्षित रखेंगे।

कवरेज की रकम कम रखना सबसे बड़ी भूल

शेंगेन देशों के लिए वीजा लेने के लिए कम से कम 30,000 यूरो का कवर जरूरी होता है, लेकिन ये सिर्फ वीजा की शर्त है, सुरक्षा के लिए नहीं। अमेरिका या यूरोप जैसे देशों में मेडिकल खर्चा बहुत ज्यादा होता है। वहां एक दिन आईसीयू में रहने से ही पूरी कवरेज रकम खत्म हो सकती है और बाकी लाखों रुपये खुद की जेब से देने पड़ सकते हैं। इसलिए सावधानी बरतें और ध्यान रखें।

पहले से मौजूद बीमारियां छिपाना भारी

कई लोग डायबिटीज या हाई ब्लड प्रेशर जैसी पुरानी बीमारियां छिपा देते हैं, ताकि प्रीमियम कम देना पड़े। अगर विदेश में हॉस्पिटल में भर्ती होना पड़े और वो बीमारी छिपाई गई पुरानी बीमारी से जुड़ी हुई निकले, तो क्लेम तुरंत रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए जब भी इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस लें तो अपनी सारी बीमारियों का उल्लेख करें। इससे क्लेम लेने में परेशानी होगी।

सिर्फ मेडिकल कवर पर ध्यान न दें

ट्रैवल इंश्योरेंस में सिर्फ इलाज ही नहीं, फ्लाइट डिले, कैंसिलेशन और सामान खोने जैसी परेशानियों का भी कवर मिलता है। "अगर फ्लाइट छह घंटे से ज्यादा लेट हो जाए तो होटल और खाने का खर्चा क्लेम किया जा सकता है। सामान खोने पर एयरलाइन का लिखित डॉक्यूमेंट जरूर रखें, वरना इंश्योरेंस कंपनी क्लेम नहीं मानेगी।" इसलिए सिर्फ मेडिकल कवर ही नहीं, बाकी चीजों पर ध्यान न दें, ताकि किसी आपात स्थति में आपको परेशानी का सामना न करना पड़े।

सब-लिमिट को नजरअंदाज करना

कई पॉलिसी में रूम रेंट या सर्जरी जैसे खर्चों पर अलग-अलग कैप यानी सब-लिमिट होती है। "भले ही कुल कवरेज रकम ज्यादा हो, लेकिन सब-लिमिट की वजह से क्लेम में बहुत कटौती हो सकती है।" इसलिए सब लिमिट पर भी ध्यान दें, ताकि बाद में पछताना न पड़े। इससे आप आसानी से क्लेम कर सकेंगे।

अपनी ट्रिप के हिसाब से सही इंश्योरेंस चुनें

कवरेज रकम और फीचर्स आपकी यात्रा की जगह, मकसद और दिनों के हिसाब से होने चाहिए। जानकारों का कहना है कि आप जिस देश में जा रहे हैं, वहां इलाज का औसत खर्चा एक बार जरूर चेक कर लेना चाहिए। अमेरिका-यूरोप में इलाज का खर्च बहुत महंगा पड़ता है, जबकि साउथ ईस्ट एशिया या मिडिल ईस्ट में थोड़ा कम, लेकिन फिर भी काफी ज्यादा होता है। इसलिए पहले उस देश की स्थिति जरूरी देख लें जहां आप घूमने जा रहे हैं।

यात्रा का मकसद

बिजनेस ट्रिप पर जाने वाले लोग फ्लाइट डिले, मिस्ड कनेक्शन और लैपटॉप-डिवाइस कवर को प्राथमिकता दें। घूमने-फिरने वाले लोगों को एडवेंचर स्पोर्ट्स, कार रेंटल या क्रूज कवर की जरूरत पड़ सकती है। "बुजुर्गों को पुरानी बीमारियां पूरी तरह बतानी चाहिए। कैशलेस हॉस्पिटलाइजेशन वाली पॉलिसी लें और कम खर्च वाले देशों में भी ज्यादा कवरेज रखें।" शुरू में आपको थोड़ा ज्यादा पैसा प्रीमियम के तौर पर देना पड़ सकता है, बाद में यह आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है।

एक्सक्लूजन और शर्तें ध्यान से देखें

एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं : ज्यादातर पॉलिसी में सिर्फ लाइसेंस वाले इंस्ट्रक्टर की निगरानी में किए गए मनोरंजन वाले एक्टिविटी का कवर मिलता है। प्रोफेशनल लेवल पर प्राइज मनी वाली एक्टिविटी शामिल नहीं होती। एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं देखकर ही बीमा करवाएं।

डिडक्टिबल और सब-लिमिट

डिडक्टिबल वो फिक्स रकम है जो आपको खुद देनी पड़ती है, उसके बाद इंश्योरेंस शुरू होता है। "लोग अक्सर नहीं जानते कि डिडक्टिबल से कम का क्लेम बिल्कुल नहीं मिलेगा।" विदेश यात्रा का इंश्योरेंस सिर्फ औपचारिकता नहीं है। सही तरीके से समझकर और अपनी जरूरत के मुताबिक लिया गया प्लान भारी-भरकम मेडिकल बिल, ट्रिप में रुकावट और दूसरी परेशानियों से बचा सकता है।

निवेशकों को खूब भाया

फ्लेक्सी कैप फंड्स इस साल रहा टॉपर

- नेट सेल्स 12 महीनों में सबसे ज्यादा रही
- म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ हुआ
- फ्लेक्सी कैप की खासियत ये लार्ज, मिड व स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश बदलते रहते हैं

बिजनेस डेस्क

एक साल में म्यूचुअल फंड मार्केट में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे बड़े विजेता बनकर उभरे हैं। यह दिखाता है कि उतार-चढ़ाव वाले बाजार में निवेशक अब ज्यादा लचीलापन चाहते हैं। फ्रैंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 12 महीनों में फ्लेक्सी-कैप फंड्स में सभी इक्विटी कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश आया है। पिछले 12 महीनों में इन फंड्स में करीब 75,700 करोड़ का नेट निवेश दर्ज किया गया। निवेशकों ने इसमें बढ़-चढ़कर निवेश और अपनी पूंजी बढ़ाई। इस फंड में मिल रहे अच्छे रिटर्न के कारण ही यह इस सबसे लोकप्रिय फंड बनकार उभरा और निवेशकों का धन बढ़ाने का काम किया।

इक्विटी की मजबूती से बूस्ट

फ्लेक्सी-कैप फंड्स के अच्छे प्रदर्शन से कुल इक्विटी-बेस्ड म्यूचुअल फंड्स की हिस्सेदारी बढ़ी है। अब इक्विटी स्कीमें कुल म्यूचुअल फंड एयूएम का करीब 60% हिस्सा रखती हैं, जो बताता है कि रिटेल निवेशक हाई रिटर्न के लिए जोखिम लेने को तैयार हैं। एसआईपी के जरिए इक्विटी फंड्स में लगातार पैसा आ रहा है, जिससे फ्लेक्सी-कैप फंड्स को लंबे समय का स्थिर निवेश मिल रहा। ये पोर्टफोलियो का हिस्सा बनते जा रहे हैं।

म्यूचुअल फंड का एसेट्स बैंक डिपॉजिट का एक तिहाई

घरेलू बचत के तरीके में अब साफ बदलाव दिखाई दे रहा है। म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ रुपये हो गया है, जो अब कुल बैंक डिपॉजिट का करीब 33% है। एक दशक पहले यह आंकड़ा सिर्फ करीब 13% था। यह बढ़ोतरी दिखाती है कि निवेशक पारंपरिक फिक्स्ड डिपॉजिट से धीरे-धीरे हटकर लंबे समय में ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं, खासकर फ्लेक्सी-कैप जैसे इक्विटी आधारित फंड्स की तरफ।

निवेशकों की सोच में बदलाव

पिछले 5 सालों में म्यूचुअल फंड की संपत्ति 22% की सालाना दर (सीएजीआर) से बढ़ी है, जो बैंक डिपॉजिट की करीब 11% की बढ़त से डबल है। यह बढ़ता गैप बताता है कि लोगों में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है, मेट्रो शहरों के बाहर भी म्यूचुअल फंड की पहुंच मजबूत हुई है और प्रोफेशनल फंड मैनेजमेंट पर भरोसा बढ़ा है। ग्रोथ की संभावना और लचीलापन रखने वाले फ्लेक्सी-कैप फंड्स इस बदलाव के सबसे बड़े बेनेफिशियरीज में शामिल हैं।

फ्लेक्सी-कैप फंड की पॉपुलैरिटी बढ़ी

फ्लेक्सी-कैप फंड्स की बढ़ती लोकप्रियता व घरेलू बचत में म्यूचुअल फंड की बढ़ती हिस्सेदारी यह साफ दिखाती है कि भारत में निवेश की सोच बदल रही है। निवेशक अब बाजार से जुड़े विकल्पों में ज्यादा पैसा नहीं लगा रहे, बल्कि ऐसे फंड भी चुन रहे हैं जो डायवर्सिफिकेशन और लचीलापन दोनों देते हैं। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बैंक डिपॉजिट पर बढ़त बना रहे हैं, फ्लेक्सी-कैप फंड्स आने वाले समय में लंबी अवधि में संपत्ति बनाने की इस कहानी के केंद्र में बने रह सकते हैं।

क्या है फ्लेक्सी कैप फंड

फ्लेक्सी कैप फंड एक ओपन-एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश करता है। इसमें फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, जिससे वे बाजार की स्थितियों के अनुसार अपने पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।

फ्लेक्सी कैप फंड की विशेषताएं

- **लचीलापन:** फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, वे बाजार के अनुसार पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।
- **विविधता:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से लार्ज, मिड व स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **जोखिम और रिटर्न का संतुलन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको जोखिम और रिटर्न का संतुलन मिलता है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है ।

फ्लेक्सी कैप फंड के लाभ

- **पेशेवर मैनेजमेंट:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको पेशेवर फंड मैनेजर्स की दक्षता और जानकारी का लाभ मिलता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है

ईपीएफ-एनपीएस से एफडी तक

2025 में बुजुर्गों को मिला कितना रिटर्न

जानकारी
बिजनेस डेस्क

इस साल भारत के बुजुर्गों के लिए सेवानिवृत्ति पर निवेश से मिले-जुले नतीजे सामने आए हैं। ज्यादातर फिक्स्ड इनकम वाले विकल्पों में रिटर्न स्थिर रहे, जबकि शेयर बाजार से जुड़े निवेश में काफी उतार-चढ़ाव दिखा। यह सब निवेश की मात्रा और सही समय पर निर्भर करता रहा। सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले सुरक्षित विकल्पों में रिटर्न अच्छे और स्थिर रहे। पेंशनबाजार के हेड विश्वजीत गोयल के मुताबिक, ईपीएफ ने 2024-25 के लिए 8.25 फीसदी ब्याज दिया। वहीं सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम (एससीएसएस) और सुकन्या समृद्धि योजना जैसी सरकारी छोटी बचत योजनाओं में 8.2 फीसदी का रिटर्न मिला। पोस्ट ऑफिस की जमा योजनाएं 6.9 से 7.5 फीसदी तक ब्याज दे रही थीं, जबकि बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट में बुजुर्गों को 7 से 7.5 फीसदी के बीच मिला। कुल मिलाकर सुरक्षित विकल्पों में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया।

बाजार से जुड़े निवेश में बड़ा अंतर

मार्केट लिंक्ड विकल्पों की बात अलग थी। विश्वजीत गोयल बताते हैं कि नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) के इक्विटी स्कीमों ने एक साल में मिड-20 से लो-30 फीसदी तक रिटर्न दिया। कॉर्पोरेट बॉन्ड स्कीमों में करीब 9 फीसदी और सरकारी बॉन्ड स्कीमों में 4 से 6 फीसदी तक मिला।

- रिटायरमेंट निवेश का सचः 2025 में बुजुर्गों के रिटायरमेंट निवेश में फिक्स्ड इनकम स्थिर रहे
- वहीं, इक्विटी और एनपीएस में रिटर्न समय और निवेश के हिसाब से बदलते रहे

एक आम रिटायरमेंट के करीब व्यक्ति जिसने एनपीएस में बैलेंस्ड तरीके से पैसा लगाया, उसे कुल 8 से 12 फीसदी रिटर्न हाथ लगा, लेकिन शेयर बाजार इंडेक्स ने बहुत कम दिया। जानकारों के अनुसार, निफ्टी और सेंसेक्स टीआरआई ने वित्त वर्ष 2025 में महज करीब 6 फीसदी रिटर्न दिया।

निवेशकों की गलतियां

आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि कई बुजुर्गों ने गलतियां कीं। ज्यादातर लोग बैंक डिपॉजिट में ही ज्यादा पैसा रखे रहे, टैक्स बचत वाले विकल्पों का फायदा नहीं उठाया या गलत एन्युटी प्लान चुन लिया, जिससे पेंशन कम हो गई या जीवनसाथी को कोई सुरक्षा नहीं मिली। सबसे बड़ी समस्या यह रही कि मेडिकल महंगाई 12-15 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है, जबकि ज्यादातर बुजुर्गों को सिर्फ 7-8 फीसदी रिटर्न मिल रहा है। ऑनलाइन ठगी का खतरा बताया। उदाहरण के तौर पर पुणे के एक रिटायर्ड बैंक मैनेजर ने गारंटीड रिटर्न का लालच देकर चलाए जा रहे ऑनलाइन स्कैम में पूरा 2.2 करोड़ रुपये गंवा दिए।

ये जरूरी बदलाव आपको 2026 के लिए क्या करनी है तैयारी

- आर्थिक विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अब धीरे-धीरे ऐसा पोर्टफोलियो बनाएं। इसमें नियमित आय भी आए और थोड़ी ग्रोथ भी रहे। मिड और स्मॉल कैप में ज्यादा निवेश कम करें, डेट हिस्से को मजबूत बनाएं और 3 से 5 साल की जरूरत के लिए लिक्विडिटी अलग रखें।
- एससीएसएस, ईपीएफ, शॉर्ट से मीडियम टर्म डेट फंड्स, रीट्स/इनविट्स, लैडर्ड फिक्स्ड डिपॉजिट और थोड़ा सा इक्विटी हिस्सा मिलाकर चलें। साथ ही 6 से 12 महीने का आपातकालीन फंड जरूर रखें।

अनुमानः ब्याज दरें नीचें आएंगी

- विशेषज्ञों की लोगों को सलाह कि वे लंबे समय के ब्याज दरें नीचे आएंगी, इसलिए अभी जो अच्छे स्थिर रिटर्न मिल रहे हैं, उन्हें लॉक कर लेना चाहिए। अनुमान है कि 2026 में बैंक एफडी पर 5.5 से 7.5 फीसदी और जी-सेक पर 6 से 6.5 फीसदी तक मिल सकता है। अगर ब्याज दरें गिरेंगी तो एन्युटी की पेआउट भी कम हो सकती है।
- 2024-25 में कई बड़े नियम बदले। यूनिफाइड पेंशन स्कीम शुरू हुई, एनपीएस वात्सल्य लॉन्च हुआ, एनपीएस/यूपीएस/एपेवाई के चार्जेस बदले गए और इंश्योरेंस टैक्स व जीएसटी में भी बदलाव आए। 2026 की प्लानिंग करते समय इन सब पर नजर रखनी जरूरी है।

सावधानी नहीं बरती तो बिगड़ जाएगा फाइनेंस का पूरा गणित

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही तय करते हैं बुढ़ापे की जिंदगी

लापरवाही बरती तो बुढ़ापे में इसका खामियाजा भुगतना होगा

बिजनेस डेस्क

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही बुढ़ापे की जिंदगी तय करते हैं। अगर आपने इस उम्र में गलत डिसीजन लिए या लापरवाही बरती तो बुढ़ापे पर आपको इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे 5 ऐसी गलतियों के बारे में जो आपके बुढ़ापे पर फाइनेंस का पूरा गणित बिगाड़ सकती हैं और आपको भारी आर्थिक परेशानियों का समना करना पड़ सकता है। जवानी में करियर, मस्ती और लाइफस्टाइल पर पूरा फोकस रहता है। इसी भागदौड़ में कई ऐसे फैसले टलते रहते हैं, जो बुढ़ापे को सिक्योर बनाने के लिए बेहद जरूरी होते हैं। उस वक्त लगता है कि अभी बहुत समय है, बाद में देख लेंगे. लेकिन जब उम्र बढ़ती है और जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, तब उन गलतियों को सुधारने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है।

निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा

निवेश में देरी

सबसे बड़ी और सबसे आम गलती है समय रहते निवेश शुरू न करना। कई लोग निवेश को खर्च समझ लेते हैं और सोचते हैं कि जब सैलरी बढ़ेगी तब निवेश करेंगे। कुछ लोग 20 साल और 30 साल की उम्र मौज-मस्ती में निकाल देते हैं, जबकि हकीकत यह है कि निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा है। छोटी रकम से भी निवेश शुरू किया जा सकता है, जितनी जल्दी निवेश शुरू करेंगे, उतना ज्यादा समय कंपाउंडिंग को मिलेगा और उतना बड़ा फंड तैयार होगा। देर करने पर बुढ़ापे में फंड की कमी साफ महसूस होती है। इसलिए हमेशा निवेश जल्द शुरू कर देना चाहिए, ताकि बाद में पछताना ना पड़े और समय रहते आपके पास अच्छा खासा फंड एकत्र हो सके।

घर नहीं सोचा तो बुढ़ापे में परेशानी

आज भी बहुत से लोग किराए के घर में रहते हुए सोचते रहते हैं कि कभी तो अपना घर लेंगे। लेकिन सही समय पर प्लानिंग न करने की वजह से ये सपना अधूरा रह जाता है। जवानी में होम लोन लेना आसान होता है, ईएमआई चुकाने के लिए लंबा समय मिलता है और इनकम बढ़ने की संभावना भी रहती है। 40 साल की उम्र के बाद ये फैसला मुश्किल हो जाता है। जो लोग समय रहते घर की प्लानिंग नहीं करते, वो बुढ़ापे में सबसे ज्यादा पछताते हैं। इसलिए आप अपना बुढ़ापा शान से गुजारना चाहते हैं तो 40 साल की उम्र होने से पहले ही अपने लिए एक मकान जरूर बना लें। इससे आपको बुढ़ापे में परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी।

लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल

जरूरत और शौक के फर्क को न समझना भी एक बड़ी गलती है। कई युवा लग्जरी लाइफ जीने के लिए क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर जरूरत से ज्यादा निर्भर हो जाते हैं। लंबे समय तक कर्ज चुकाने से सेविंग नहीं बन पाती। नतीजा यह होता है कि बुढ़ापे तक भी ईएमआई पीछा नहीं छोड़ती। लोन उतना ही लें, जितना आपकी इनकम और सेविंग्स आराम से संभाल सकें। लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल एक बड़ा खतरा है, जिससे हमें बचना होगा। हमें अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी, बजट बनाना, कर्ज लेने से पहले सोचना और कर्ज को जल्दी चुकाने की कोशिश करनी होगी। तभी हम कर्ज के जाल से बच सकते हैं।

इंश्योरेंस से दूरी

कई लोग सोचते हैं कि इंश्योरेंस की अभी क्या जरूरत है, लेकिन यही सोच आगे चलकर भारी पड़ती है। कम उम्र में टर्म और हेल्थ इंश्योरेंस लेने पर प्रीमियम कम होता है और कवर ज्यादा मिलता है। यह मुश्किल समय में आपके और आपके परिवार के लिए मजबूत सुरक्षा कवच बनता है। हेल्थ खर्च और अनहोनी से बचाव के लिए इंश्योरेंस को नजरअंदाज करना बड़ी भूल है। समय रहते इंश्योरेंस कवर ले लेना चाहिए, ताकि आपात स्थिति में मुंह न ताकना पड़े।

रिटायरमेंट प्लानिंग टालना

बच्चे संभाल लेंगे या अभी तो बहुत टाइम है जैसी सोच सबसे खतरनाक होती है। जल्दी रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना ही मजबूत फंड तैयार होगा।

स्पर्धा में लक्ष्मी नारायण, ध्रुव, कनिष्क और रियांद की टीम ने स्वर्ण पदक जीतकर शानदार सफलता हासिल की

ऑल इंडिया ओपन नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में प्रताप स्कूल के तीरंदाजों ने 21 पदक कब्जाए

खरखौदा। खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए स्कूल प्रबंधन फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

जयपुर, राजस्थान में आयोजित ऑल इंडिया ओपन नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में प्रताप विद्यालय के तीरंदाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 21 पदक जीतकर प्रदेश, विद्यालय, जिले का नाम रोशन किया। अंडर - 13 वर्ग में लक्ष्मी नारायण ने स्वर्ण पदक, ध्रुव ने रजत पदक और कनिष्क ने कांस्य पदक प्राप्त किया। इसी वर्ग की टीम स्पर्धा में लक्ष्मी नारायण, ध्रुव, कनिष्क और रियांद की टीम ने स्वर्ण पदक जीतकर शानदार सफलता हासिल की। अंडर-15 वर्ग में आयुष और वंश की टीम ने स्वर्ण पदक जीता। वहीं माहिर, प्रशांत और हितकार्श की टीम ने भी स्वर्ण पदक अपने नाम किया। अंडर-10 वर्ग में लक्ष्य ने रजत पदक प्राप्त किया। अंडर-17 कंपाउंड वर्ग में तुषार ने रजत पदक और अमन ने कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। अंडर -21 वर्ग में आयुष ने स्वर्ण पदक तथा हितेश ने रजत पदक हासिल किया। वहीं अंडर-17 टीम स्पर्धा में गर्व और सागर की टीम ने रजत पदक जीता। द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित कोच ओम प्रकाश दहिया, प्रधानाचार्य दया दहिया, एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया एवं आर्चरी कोच कुलविंदर ने सभी खिलाड़ियों को बधाई दी। विद्यालय के अध्यक्ष वेद प्रकाश दहिया व संस्थापक सतप्रकाश दहिया ने भी पदक विजेता खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं।

ज्ञान गंगा ग्लोबल विद्यालय के किड्स एथलीटों ने जीते 4 गोल्ड

सोनीपत। ज्ञान गंगा ग्लोबल स्कूल (जी-3) के किड्स एथलीटों ने दूसरी हरियाणा ओपन किड्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए 4 पदक जीतकर अपने विद्यालय का नाम रोशन किया है। सीआरए कॉलेज के मैदान पर आयोजित किड्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप के अंडर-12 आयु वर्ग में युग व भुवनेश्वर ने रजत पदक जीता, जबकि दक्ष व वैभव ने कांस्य पदक हासिल किया। स्कूल में इन सभी खिलाड़ियों का जोरदार स्वागत किया गया। स्कूल की प्राचार्या गीता चोपड़ा व उप प्राचार्या रूना दास ने चारों पदक विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर कोऑर्डिनेटर नीरजा, महक व गीता राणा, निशा, रितु सिंह, श्वेता, नमिता, मधु, ज्योति, सोनिया मदान, निशा, सीमा रानी, रेखा, पारुल, कावेरी, मीनू, अर्चना, सुषमा, आहुति, स्वाति, सरिता, मनीष, खेल इंचार्ज संजीत, पीटीआई राखी सहित सभी स्टाफ सदस्यों ने भी पदक विजेताओं का हौसला बढ़ाया।

सोनीपत। ज्ञान गंगा ग्लोबल स्कूल में पदक विजेता किड्स एथलीट विद्यालय की प्राचार्या गीता चोपड़ा, खेल इंचार्ज संजीत व पीटीआई राखी के साथ।

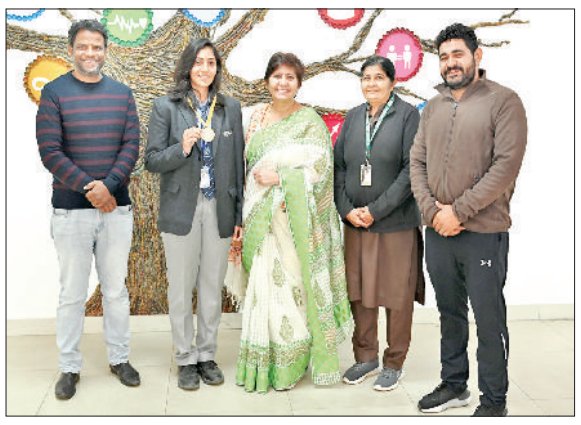

छात्रा सिया मलिक का राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्णिम प्रदर्शन

सोनीपत। नेशनल रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप 2025 का आयोजन एचएसवी ग्लोबल स्कूल, सेक्टर-46, गुरुग्राम (हरियाणा) में किया गया। इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देशभर से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया और पदक जीतने के लिए जोरदार मुकाबला किया। ब्राइट स्कॉलर स्कूल की छात्रा सिया मलिक (कक्षा 11वीं, अंडर-19 वर्ग) ने 500+ मीटर रेस में शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। सिया मलिक सोनीपत की पहली लड़की बन गई हैं, जिन्होंने इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर जिले का नाम रोशन किया है। स्कूल की प्राचार्या डॉ. किरण दलाल ने सिया मलिक और उनके प्रशिक्षक मनीष नैन को इस सफलता पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि सिया ने शुरुआत से ही खेलों के साथ-साथ पढ़ाई में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। सिया इससे पहले भी विभिन्न स्तरों पर अनेक पदक जीत चुकी हैं और लगातार अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाती रही हैं। प्राचार्या ने सिया के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आगामी सभी प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दीं।

गोहाना। चैंपियनशिप का शुभारंभ करते अतिथि एवं आयोजक। फोटो :हरिभूमि

मुक्केबाजों ने कला प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

हरियाणा बॉक्सिंग संघ द्वारा शनिवार को जय बाला जी स्पोर्ट्स अकादमी में 6वीं राज्यस्तरीय अलाइट महिला बॉक्सिंग चैंपियनशिप का शुभारंभ किया गया। चैंपियनशिप में हरियाणा प्रदेश के कोने-कोने से महिला मुक्केबाज मुक्के का दम दिखाने पहुंची। चैंपियनशिप के प्राथमिक मुकाबलों में मुक्केबाजों ने कला प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि डॉ. गजराज कौशिक और ओलंपियन एवं अर्जुन अवार्डी जितेन्द्र कुमार थे। अतिथियों ने स्पोर्ट्स अकादमी के निदेशक जितेंद्र हुड्डा और मुख्य प्रशिक्षक नवीन हुड्डा के साथ दीप प्रज्वलित करके चैंपियनशिप का शुभारंभ किया। संयोजन हरियाणा बॉक्सिंग संघ के महासचिव ओमबीर हुड्डा और जय बाला जी अकादमी के अध्यक्ष अनिल मोर का रहा। चैंपियनशिप के प्राथमिक मुकाबलों में 45-48 किलोग्राम भारवर्ग में कल्पना, रामभतेरी, माही सिवाच, प्रियंका, मनीषा और काजल, 48-51 किलोग्राम भारवर्ग में मीनाक्षी, मानसी, सोनू, वकील रानी और नितिका, 51-54 किलोग्राम भारवर्ग में प्रियंका, कीर्ति, तमन्ना दांगी, संजीता, शिवानी और पूजा, 54-57 किलोग्राम भारवर्ग में दीपिका, मोनिका और पूजा विजेता बनी। महिला मुक्केबाजों ने अन्य भारवर्ग के मुकाबलों में भी अपनी अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। हरियाणा बॉक्सिंग संघ से कैप्टन परवीर, जिला सोनीपत इकाई के अध्यक्ष अशोक खत्री, अनिल (रोहतक एनसीओ), धर्मेन्द्र यादव उर्फ गोगी, राजेश और प्रशिक्षक अनिल शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बॉक्सिंग में आगे आएं युवा

हरियाणा बॉक्सिंग संघ के प्रदेश अध्यक्ष मेजर सत्यपाल ने कहा कि आज बॉक्सिंग में कॅरियर निर्माण की अच्छी सम्भावनाएं हैं। युवा पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी कॅरियर निर्माण के लिए आगे आएं। महिला खिलाड़ियों की भी बॉक्सिंग में खासी रुचि है। आज महिलाएं भी खेलों में पीछे नहीं हैं। कहा कि कड़ी मेहनत और मन में दृढ़ संकल्प खेलों में सफलता के आधार हैं। युवा खेलों में लक्ष्य के साथ आगे बढ़ें।

हिंदी राइम रेसिटेशन प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

सोनीपत। सरस्वती शिक्षा संस्थान

सीनियर सेकेंडरी स्कूल सोनीपत (एस-7) विद्यालय परिसर शनिवार को हिंदी राइम रे सि टे श न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नर्सरी से प्राइमरी कक्षाओं के बच्चों ने हिंदी राइम्स का पाठ किया। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, सही उच्चारण तथा अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम ने न केवल बच्चों की प्रतिभा को निखारा बल्कि उनके भीतर छिपी सृजनात्मकता को भी मंच प्रदान किया। विद्यालय परिवार ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

साहिबजादों की शहादत पर सैंड आर्ट शो

■ जिला शिक्षा अधिकारी गुलिया ने कार्यक्रम का किया शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

हरियाणा सरकार द्वारा गुरु गोबिंद सिंह के चार साहिबजादों के अद्वितीय बलिदान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सैंड आर्ट शो व जिला स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित करवाई जा रही है। इसी कड़ी में वीर बाल दिवस के अवसर पर गांव अकबरपुर बारोटा स्थित पीएम श्री राजकीय वमावि में एनएसबी प्रोडक्शन के कलाकारों ने भव्य सैंड आर्ट शो प्रस्तुत किया, जिसके माध्यम से स्क्रीन पर चार साहिबजादों की शहादत का सजीव चित्रण किया। सरकारी विद्यालयों के लगभग 300 विद्यार्थियों ने निबंध लेखन प्रतियोगिता में भी भाग लिया। वीर बाल दिवस के अवसर पर सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग, शिक्षा विभाग तथा हरियाणा कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सैंड आर्ट शो एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को गुरु गोबिंद सिंह के चार साहिबजादों की अद्वितीय वीरता एवं शहादत से परिचित कराना है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी नवीन गुलिया ने किया। इस अवसर पर एनएसबी प्रोडक्शन के देश प्रसिद्ध कलाकार सर्वम पटेल सैंड आर्ट के माध्यम से साहिबजादा अजीत सिंह, साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह एवं साहिबजादा फतेह सिंह के शौर्य, बलिदान और त्याग के ऐतिहासिक प्रसंगों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

सोनीपत। निबंध लेखन प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

दातौली में 17 साल बाद फिरनी निर्माण प्रारंभ विधायक देवेंद्र कादियान ने किया शिलान्यास

■ दातौली में जल्द बनेगी पीएचसी, विधायक कादियान ने दिया भरोसा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गन्नौर

दातौली गांव में लंबे इंतजार के बाद विकास कार्य को हरी झंडी मिल गई। गांव में जगदीश सैनी के घर से पार्क तक करीब 1100 फीट लंबी फिरनी के निर्माण कार्य का शिलान्यास विधायक देवेंद्र कादियान ने नारियल तोड़कर किया। यह फिरनी करीब 17 वर्षों केबाद बन रही है, जिस पर लगभग 18 लाख रुपये खर्च होंगे। शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान सरपंच प्रतिनिधि लोकेश गोस्वामी सहित ग्रामीणों ने विधायक का फूलमाला से स्वागत किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। इस मौके पर ग्रामीणों ने गांव से जुड़ी समस्याओं और विकास संबंधी मांगें विधायक के सामने रखी। सरपंच प्रतिनिधि लोकेश गोस्वामी ने बताया कि दातौली गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण प्रस्तावित है। इसके लिए विभाग के नाम जमीन पहले ही दर्ज करवाई जा चुकी है, लेकिन निर्माण कार्य अभी तक शुरू नहीं हो सका है। विधायक कादियान ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि पीएचसी का निर्माण जल्द शुरू कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि पीएचसी निर्माण का एस्टीमेट रिवाइज्ड कर भेजा हुआ है और जल्द इसकी स्वीकृति मिलने की उम्मीद है।

गन्नौर। फिरनी के निर्माण कार्य का शिलान्यास विधायक देवेंद्र कादियान ने नारियल तोड़कर करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर बीडीपीओ राजेश टिवाना, पंचायती राज एसडीओ विपुल छौक्कर, पूर्व सरपंच ओमप्रकाश, हरबीर गोस्वामी, शिशपाल नंबरदार, रणधीर गोस्वामी, राजू गिरी, कंवर सैनी, सुल्तान, संजय बंजारा, नवीन कृष्ण गिरी, घनश्याम, मंजीत सरपंच अगवानपुर, महेश सरपंच घसौली, नरेंद्र त्यागी आदि मौजूद रहे।

ब्लॉक समिति चेयरमैन ने विधायक पवन के बयान पर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

विधानसभा सत्र में विधायक पवन खरखौदा ने दादी घोघड़ी देवी के स्मारक पर चर्चा के दौरान कहा कि कुछ शरारती तत्व प्रस्तावित स्मारक के निर्माण में कथित अड़चन पैदा कर रहे हैं। विधायक की बात पर आपत्ति जताते हुए ब्लॉक समिति चेयरमैन सतेंद्र दहिया ने कहा कि विधायक स्पष्ट करें कि वह शरारती तत्व किसे कह रहे हैं। ऐसी गोल-मोल बात ना करके सीधे सीधे तथाकथित शरारती तत्वों के नाम बताएं। अपना पक्ष रखते हुए उन्होंने बताया कि 19 मार्च 2025 को पंचायत समिति की बैठक में प्रस्ताव पास कर भगवान परशुराम पार्क के साथ लगती जमीन पर दादी घोघड़ी देवी के नाम से स्मारक व हाल बनाने का प्रस्ताव पास किया गया था और स्मारक बनाने के लिए उन्होंने जमीन पर मिट्टी का भराव कार्य भी आरंभ करवा दिया था। उन्होंने बताया कि प्रस्ताव पास होने के बाद एसडीओ पंचायतीराज व जेई के द्वारा जमीन की निशानदेही भी करवा दी गई थी। उस समय ब्राह्मण समाज के गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे। उन्हीं की देखरेख में यह निशानदेही का कार्य करवाया गया था। उन्होंने दोहराया जब समिति द्वारा प्रस्ताव पास कर दिया गया तो अब खरखौदा विधायक शरारती तत्व शब्द का प्रयोग किसके लिए कर रहे हैं।

नागरिकों ने संत गाडगे को याद कर श्रद्धांजलि दी

गोहाना। शहर के मुख्य स्थित सनातन धर्म मंदिर में शनिवार को संत गाडगे की 69वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया गया। समारोह में नागरिकों ने संत गाडगे को याद करके श्रद्धांजलि दी। मार्गदर्शन आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह दांगी ने किया। मुख्य वक्ता डा. समुद्र दास महाराज ने कहा संत गाडगे महाराज ने अपना सारा जीवन समाज सेवा, स्वच्छता और शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया। वे जाति प्रथा और छुआछात के घोर विरोधी थे। वह केवल एक संत नहीं बल्कि एक महान समाज सुधारक और लोक सेवा के रूप में पूरे भारत में खासकर महाराष्ट्र में पूजनीय बन गए। समारोह की अध्यक्षता आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के शहरी इकाई के अध्यक्ष सुभाष वर्मा ने की। कहा संत गाडगे ने जीवन भर गरीबों, बेघर, अनाथों और बीमारों की सेवा की। उन्होंने कई धर्मशालाएं, गोशालाएं और शिक्षण संस्थान बनवाए।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को जागरूक करते वक्ता।

छात्राओं को दी व्यक्तित्व विकास और वित्तीय साक्षरता की जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

रोटरी क्लब ऑफ़ सोनीपत अरडेंट के तत्वावधान में आर्या गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सोनीपत में छात्राओं के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से व्यक्तित्व विकास एवं वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शिखा तोमर ने व्यक्तित्व विकास विषय पर छात्राओं को आत्मविश्वास, प्रभावी संचार कौशल, सकारात्मक सोच और लक्ष्य निर्धारण के महत्व पर प्रेरक विचार सांझा किए। वित्तीय साक्षरता सत्र में रोटेरियन विशाल बेदी ने बचत, बजट प्रबंधन, निवेश और जिम्मेदार वित्तीय निर्णयों की जानकारी सरल उदाहरणों के माध्यम से दी।

स्व.पूर्व सीएम चौटाला को कार्यकताओं ने किया याद

खरखौदा। इनेलो कार्यकर्ताओं ने भूतपूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला की प्रथम पुण्यतिथि पर खरखौदा में हवन यज्ञ किया। कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित करके नमन किया। इस अवसर पर ब्लॉक खेल प्रकोष्ठ अध्यक्ष पवन राणा ने कहा कि प्रदेश में पांच बार मुख्यमंत्री रहे स्वर्गीय ओमप्रकाश चौटाला ने अपने कार्यकाल में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने का काम किया था। किसानों, व्यापारियों, कर्मचारियों व अन्य जनहितैषी योजनाएं बनाकर प्रदेश की जनता को लाभ पहुंचाया था। इसीलिए प्रदेश की जनता ने उन्हें पांच बार मुख्यमंत्री बनाने का गौरव प्रदान किया। जननायक देवीलाल के पद चिन्हों पर चलते हुए प्रदेश में नए आयाम स्थापित किए थे। इस मौके पर युवा शहरी प्रधान प्रवीण भांजा, रोहतास, रणबीर दहिया, एडवोकेट मोहन राणा, अंकित, तीर्थ, सोनू, गोविंद ,साहिल व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खरखौदा। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए शिक्षक फोटो : हरिभूमि

सोलो नृत्य में बंटी और भाषण प्रतियोगिता में कुनाल द्वितीय रहे

■ विद्यार्थियों ने जूनियर रेड क्रॉस कैम्प में शानदार प्रदर्शन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खरखौदा

पीएमश्री राजकीय वमावि खरखौदा के विद्यार्थियों ने जूनियर रेड क्रॉस कैम्प में शानदार प्रदर्शन किया। इस कैम्प में मानवता को जीवित रखने पर कार्य किया गया। कैम्प में जिला स्तर पर बंटी ने सोलो नृत्य में तथा कुनाल ने भाषण प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस बीच जिला शिक्षा अधिकारी नवीन गुलिया ने कैंप का निरीक्षण किया व विजेताओं को सम्मानित किया। कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। कैंप में अनुशासन और भागीदारी करने वालों को भी जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम भाजपा जिला अध्यक्ष की अध्यक्षता में गोहाना जिला कार्यकारिणी की बैठक

भाजपा लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए पारदर्शी व्यवस्था के साथ कार्य कर रही

गृहमंत्री ने कांग्रेस को तथ्यों के साथ दिया कड़ा जवाब: बिजेंद्र

■ भाजपा वाजपेयी के जन्मदिवस को 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गोहाना

गोहाना। बैठक में विचार व्यक्त करते हुए वक्ता। फोटो : हरिभूमि

जिला गोहाना भाजपा की कार्यकारिणी की बैठक शनिवार को शहर के कम्युनिटी सेंटर में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला गोहाना अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक ने की, जबकि मुख्य संबोधन जिला प्रभारी डा. किरण कलकल ने किया। बैठक में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का लोकसभा में दिया गया भाषण कार्यकर्ताओं को सुनाया गया। बिजेंद्र मलिक ने कहा कि गृहमंत्री अमित शाह ने लोकसभा में एफआइआर को लेकर कांग्रेस द्वारा लगाए गए वोट चोरी के आरोपों का तथ्यों के साथ जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए पारदर्शी व्यवस्था के साथ कार्य कर रही है।

डा. किरण कलकल ने बताया कि भाजपा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाएगी। इस अवसर पर संगठनात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। बैठक में पूर्व प्रत्याशी प्रदीप सांगवान, डा. धर्मवीर नांदल, महेंद्र चिड़ाना, जितेंद्र शर्मा, रजनी विरमानी, कृष्ण सैनी व डा. ओमप्रकाश मौजूद रहे।

सोनीपत : हिजाब आस्था, पहचान और व्यक्तिगत पसंद की अभिव्यक्तिः सृजावती

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

सोनीपत। बैठक के दौरान मौजूद समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण। फोटो : हरिभूमि

जनवादी महिला समिति की पदाधिकारियों ने मुस्लिम महिला का हिजाब खींचे जाने के मामले में निंदा जताई। जिला अध्यक्ष सृजावती ने कहा कि हिजाब आस्था, पहचान और व्यक्तिगत पसंद की अभिव्यक्ति है। किसी महिला के यह तय करने के अधिकार में दखल देना कि वह क्या पहनेगी। संविधान के अनुच्छेद 14, 19, 21 और 25 का उल्लंघन है।जनवादी महिला समिति की पदाधिकारियों ने कहा कि महिलाओं को अपने पहनावे का फैसला करने का अधिकार उनकी गरिमा, स्वायत्तता और समानता का अभिन्न अंग है। ऐसे अपमानजनक व्यवहार मुस्लिम महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक हाशिए पर धकेलने की स्थिति को और गहरा करता है। अनुशासन, एकरूपता के बहाने मुस्लिम महिलाओं को निशाना बनाना संस्थागत भेदभाव के अलावा और कुछ नहीं है। उन्होंने मांग करते हुए कहा कि सरकार तुरंत महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करते हुए स्पष्टीकरण जारी करें। किसी भी महिला या लड़की को उसके पहनावे के आधार पर शिक्षा या सार्वजनिक सेवाओं से वंचित न किया जाए। इस दौरान जिला सचिव शीला बुटाना, सह सचिव लक्ष्मी छिल्लर भी मौजूद रहीं।

प्याऊ मनियारी के पास नेशनल हाइवे 44 पर हुआ हादसा, पुलिस ने शुरू की जांच

सड़क हादसे ने ले ली 7 माह की गर्भवती की जान

हादसे में मृतक की मां भी हुई घायल, रोहतक पीजीआई की गई है रेफर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

नेशनल हाइवे 44 पर सड़क हादसे ने 7 माह की गर्भवती महिला की जान ले ली। हादसा उस समय हुआ, जब गर्भवती सड़क पार कर रही थी। इस दौरान उसकी मां भी साथ थी, जोकि गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल को गंभीर हालत के चलते रोहतक पीजीआई रेफर किया गया है। सूचना मिलने के बाद पहुंचीं पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी अनुसार उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव हॉल प्याऊ मनियारी की पेपर मिल कॉलोनी निवासी करण ने बताया कि उनकी पत्नी विनिता (20) व सास मंजू कुंडली स्थित चप्पल फैक्टरी में काम करती थीं। दोनों शुक्रवार देर शाम फैक्टरी से घर लौट रही थी। जब वह प्याऊ मनियारी के पास सड़क पार करने लगी तो उसी दौरान कार ने दोनों को टक्कर मार दी। हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गईं। दोनों को नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां पर उनकी पत्नी विनिता ने दम तोड़ दिया। वह सात माह की गर्भवती थी। सास मंजू को गंभीर हालत के चलते पीजीआई रोहतक रेफर किया गया है।

सोनीपत। नागरिक अस्पताल में शवगृह के बाहर इकट्ठा हुए परिजन, मृतक विनिता का फाइल फोटो। फोटो : हरिभूमि

दो साल से फैक्टरी में नौकरी कर रही थी विनिता

हादसे में असमय काल का ग्रास बनने वाली विनिता के पति करण ने बताया कि अभी तकरीबन डेढ़ साल पहले ही उन दोनों की शादी हुई थी। करण के अनुसार विनिता पहले भी प्याऊ मनियारी में ही रहती थी। यहीं पर दोनों की शादी हुई थी और शादी के बाद से वे दोनों इकट्ठा रह रहे थे। करण के अनुसार वे तीन साल से प्याऊ मनियारी में रहे हैं, जबकि विनिता 2 साल से फैक्टरी में नौकरी कर रही थी।

अलग-अलग हादसों में दो फैक्टरी कर्मियों की मौत

सोनीपत। कुंडली क्षेत्र में अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में दो फैक्टरी कर्मियों की मौत हो गई। कुंडली-सिंघु बॉर्डर सर्विस रोड पर हुए हादसे में विपरीत दिशा से आई कार के साइड दबाने से अनियंत्रित बाइक सवार ट्रक की चपेट में आई। वहीं दूसरे हादसे में कुंडली क्षेत्र में कार ने स्कूटी सवार फैक्टरी के वेल्डर को टक्कर मार दी। जिससे उनकी मौत हो गई। दोनों मामलों में कुंडली थाना पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर हादसों की जांच शुरू कर दी है। मूलरूप से बिहार के पूर्णिया के गांव बठेली बरहाडा हॉल दिल्ली के शाहबाद दौलतपुर निवासी रिषभराज ने कुंडली थाना पुलिस को बताया कि उनके पिता अखिलेश कुमार झा राई औद्योगिक क्षेत्र की फैक्टरी में काम करते थे। वह शुक्रवार शाम को बाइक पर सवार होकर फैक्टरी के लिए निकले थे। जब वह कुंडली-सिंघु बॉर्डर से पानीपत सर्विस रोड पर थे तो विपरीत दिशा से आई कार ने उनके पिता की तरफ साइड दबा दी। जिससे उनके पिता की बाइक अनियंत्रित हो गई। इसी दौरान पीछे से आए ट्रक ने बाइक को चपेट में ले लिया।

- कुंडली सिंघु बॉर्डर सर्विस रोड और कुंडली क्षेत्र में हुए हादसे

स्कूटी सवार फैक्टरी कर्मी की गई जान

कुंडली औद्योगिक क्षेत्र में कार की टक्कर से बाइक सवार वेल्डर की मौत हो गई। दिल्ली के नरेला निवासी पंकज शर्मा ने कुंडली थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है कि मूलरूप से उत्तर प्रदेश के जिला सिकंदरा इलाहाबाद के गांव टिकरी निवासी शिवम कुमार उनकी कंपनी एचएसआईडीसी फेस-4 हर्ष इंटरप्राइजेज में वेल्डर थे। वह वर्तमान में अपने दो बच्चों व पत्नी के साथ कुंडली के प्याऊ मनियारी में किराए पर रहते थे। वह शुक्रवार देर शाम फैक्टरी से स्कूटी पर सवार होकर काम से निकले थे। फैक्टरी से कुछ दूर जाने पर पीछे से आई कार ने उनकी स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल शिवम को साथी कर्मचारी नागरिक अस्पताल सोनीपत लेकर पहुंचे, जहां उनकी मौत हो गई। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें अस्पताल में ले जाया गया, जहां पर उनकी मौत हो गई। मामले का पता लगने पर वह मौके पर पहुंचे और आसपास पूछताछ की तो हादसे का पता लगा। उन्होंने कुंडली थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है।

व्यक्तित्व विकास में सहायक है एनएसएस : सुनील शर्मा

गोहाना। शिविर के उद्घाटन सत्र में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए एमडी सुनील शर्मा।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

जवाहर लाल नेहरू व रिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के 7 दिवसीय शिविर का शुभारंभ हो गया। शिविर के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विद्यालय के एमडी एडवोकेट सुनील शर्मा रहे। उन्होंने स्वयंसेवकों को सेवा भावना, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्र निर्माण के महत्व के बारे में समझाया। सुनील शर्मा ने कहा कि एनएसएस न केवल एक समाजसेवा का सशक्त माध्यम है अपितु यह व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण में भी सहायक है। इससे स्वयंसेवकों में समाज के प्रति सेवा भावना का विकास होता है। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सचिन शर्मा ने बताया कि शिविर में स्वच्छता, नशा मुक्ति व ड्रग एब्यूज, स्वास्थ्य जागरूकता, एड्स जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता, सडक़ सुरक्षा, समाज के समसामयिक मुद्दों, स्वदेशी उत्पादों के महत्व, साइबर सुरक्षा एवं डिजिटल साक्षरता तथा स्टार्टअप एवं स्वरोजगार से संबंधित नवाचारात्मक विचारों पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

इस अवसर पर दूसरी यूनिट के कार्यक्रम अधिकारी चिराग जैन भी मौजूद रहे।

जगदीश भाजपा किसान मोर्चा के मंडल अध्यक्ष नियुक्त

गोहाना। शिवनगरी धनाना निवासी जगदीश जाटायन पुत्र सतबीर सिंह को भाजपा किसान मोर्चा की कथूरा मंडल इकाई के अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पार्टी हाईकमान से विचारविमर्श के बाद उनकी नियुक्ति भाजपा जिला गोहाना के अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक ने की। शनिवार को यह नियुक्ति पार्टी के सोनीपत मार्ग स्थित कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में की गई। नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष जगदीश जाटायन ने अपनी इस नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी, प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली, पूर्व प्रत्याशी प्रदीप सांगवान, भाजपा जिला गोहाना के अध्यक्ष बिजेंद्र मलिक और प्रभारी डा. किरण कलकल सहित पार्टी हाईकमान का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि उनको सौंपी गई इस जिम्मेवारी का वे ईमानदारी एवं निष्ठा से निर्वहन करते हुए पार्टी के संगठन को मजबूत बनाने का काम करेंगे। इस अवसर पर पार्टी के अन्य नेता और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

खादर क्षेत्र को पिछड़े क्षेत्र की श्रेणी से निकालकर हलके का अग्रणी क्षेत्र बनाना लक्ष्य : कादियान

- पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बेगा में 'रंग तरंग' वार्षिक उत्सव धूमधाम से संपन्न

गन्नौर। पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बेगा में शनिवार को वार्षिक उत्सव 'रंग तरंग' बड़े ही हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक, कला एवं नृत्य कार्यक्रमों ने उपस्थित अतिथियों व ग्रामीणों का मन मोह लिया। वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में गन्नौर के विधायक देवेंद्र कादियान ने शिरकत की। विधायक ने विद्यालय के विकास के लिए 5 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की। विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु 51 हजार रुपये देने की भी घोषणा की गई। अपने संबोधन में विधायक देवेंद्र कादयान ने कहा कि वे सक्षम अधिकारियों से पूरी मजबूती के साथ लोगों की समस्या का समाधान करवा रहे हैं। हलके के विकास में किसी भी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। अब खादर क्षेत्र को पिछड़े क्षेत्र की श्रेणी से बाहर निकालकर गन्नौर हलके का अग्रणी क्षेत्र बनाना लक्ष्य है। विधायक ने स्पष्ट किया कि गन्नौर हलके के सरकारी विद्यालयों का सुधार उनकी पहली प्राथमिकता है और इसके लिए वे अपनी ओर से हर संभव सहायता करेंगे।

गन्नौर। विधायक देवेंद्र कादियान का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान करते हुए स्कूल स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

मौके पर ये मौजूद रहे

इस अवसर पर सुरेश भूटानी, अंग्रेज नायक, प्रवक्ता विजय कुमार, जितेंद्र खासा, संगीता, स्नेहा, संजू साक्षी, ज्योति, निर्मला, सुनीता राठी, प्रियंका ममता, प्रमोद सरोहा, राहुल शर्मा, सागर त्यागी, प्रदीप वत्स, लोकेंद्री, प्रियंका, रीना डी पी आदि मौजूद रहे।

हैप्पी चाइल्ड का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया

गन्नौर। हैप्पी चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल का चौथा वार्षिकोत्सव समारोह शनिवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र दहिया मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह में नगर पालिका अध्यक्ष अरुण त्यागी, मार्केट कमेटी गन्नौर के अध्यक्ष निशांत छौक्कर एवं उपाध्यक्ष योगेश कौशिक विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। विद्यालय प्रबंधन की ओर से सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने नृत्य, गीत और नाट्य मंचन सहित रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा। इस अवसर पर विद्यालय की ओर से बच्चों के दादा-दादी को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मुख्यातिथि वीरेंद्र दहिया ने स्कूल के होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया। विद्यालय की प्रधानाचार्य उषा मलिक ने विद्यालय की प्रगति और गतिविधियों की जानकारी दी।

न्यूज डायरी

गली निर्माण कार्य में लापरवाही करने पर ठेकेदार को नगरपालिका ने दिया नोटिस

गन्नौर। शहर के वार्ड 6 स्थित हरिनगर में नगरपालिका द्वारा कराए जा रहे गली निर्माण कार्य में लापरवाही के मामले में अब नगरपालिका ने सख्त कदम उठाया है। दो दिन पहले स्थानीय लोगों की शिकायतों के बाद नगरपालिका ने संबंधित ठेकेदार को नोटिस जारी कर दिया है। नोटिस में नगरपालिका की ओर से स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि गली निर्माण कार्य पूरी तरह नियमानुसार और गुणवत्ता के साथ किया जाए। साथ ही, जहां-जहां गलत तरीके से निर्माण कार्य किया गया है, उसे उखाड़कर नए सिरे से निर्माण करने के आदेश दिए गए हैं। नगरपालिका ने ठेकेदार को चेतावनी दी है कि यदि भविष्य में लापरवाही पाई गई तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया था कि गली निर्माण से पहले बनाई जा रही नालियों की सफाई नहीं करवाई गई और गंदगी व कीचड़ से भरी नालियों में ही ईंटों की चिनाई कर दी गई। लोगों के विरोध के बावजूद ठेकेदार के मिस्त्री काम जारी रखे हुए थे। अब नगरपालिका द्वारा नोटिस जारी किए जाने के बाद सरकारी धन के दुरुपयोग पर रोक लगेगी। नगरपालिका जेई अरविंद कुमार का कहना है कि आगे भी निर्माण कार्य पर नजर रखी जाएगी और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

मोतीलाल नेहरू स्कूल ऑफ स्पोर्ट्स का 53वां वार्षिक समारोह 24 दिसंबर को

राई। मोतीलाल नेहरू स्कूल ऑफ स्पोर्ट्स (एमएनएसएस), राई में 53वां वार्षिक दिवस समारोह 24 दिसंबर को भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि विद्युत एवं आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री भारत सरकार मनोहर लाल के आगमन के साथ होगी। समारोह में खेल, संस्कृति और अनुशासन का अनूठा संगम देखने को मिलेगा। विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं निदेशक पी.के. धीमान ने बताया कि यह आयोजन वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी (सेवानिवृत्त) अशोक कुमार के मार्गदर्शन में आयोजित होगा। समारोह के विशेष अतिथि खेल मंत्री गौरव गौतम शिरकत करेंगे। उन्होंने बताया कि मुख्य अतिथि के आगमन पर सलामी एवं विद्यालय गीत प्रस्तुत किया जाएगा। इसके पश्चात गुलदस्ता भेंट, स्वागत भाषण तथा विद्यालय रिपोर्ट का वाचन, सांस्कृतिक एवं खेल कार्यक्रमों के अंतर्गत घुड़सवारी, जिम्नास्टिक प्रदर्शन, योग और लोक नृत्य आकर्षण का केंद्र रहेंगे। दोपहर में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जाएगा, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। समारोह के अंत में कुलपति एवं मुख्य अतिथियों के संबोधन होंगे तथा स्मृति चिन्ह भेंट किए जाएंगे। आयोजन को लेकर विद्यालय स्टाफ एवं छात्रों में उत्साह है।

सोनीपत। अभियान के दौरान सफाई करवाते हुए मेयर राजीव जैन। फोटो : हरिभूमि

स्वच्छ सोनीपत के लिए नगर निगम का विशेष सफाई अभियान

सोनीपत। स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ सोनीपत के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से नगर निगम मेयर राजीव जैन के नेतृत्व में मामा भांजा चौक से महाराणा प्रताप चौक तक विशेष सफाई अभियान चलाया गया। अभियान की शुरुआत से पहले मेयर राजीव जैन ने सभी सफाई कर्मियों को मास्क वितरित कर उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। सफाई अभियान के तहत संत भरतु शाह कबीर आश्रम के सामने स्थित ड्रेन नंबर 6 में कई दिनों से जमा कूड़े को हटवाया गया। दुकानदारों द्वारा सड़क पर रखे गए वेस्ट बिल्डिंग मटीरियल के कट्टे, टाइल्स पर जमी रेत तथा ड्रेन में राहगीरों द्वारा डाली गई कचरे की थैलियों को जेसीबी मशीन की सहायता से निकलवाया गया। इस दौरान सड़क और आसपास के क्षेत्र की पूरी तरह सफाई की गई, जिससे आमजन को राहत मिली। मेयर राजीव जैन ने अभियान के दौरान दुकानदारों और रेहड़ी चालकों से अपील की कि वे सड़क पर कूड़ा न डालें, ताकि शहर की सड़कों की साफ-सफाई बनी रहे और सोनीपत स्वच्छ दिखाई दे। उन्होंने धुंध के मौसम को ध्यान में रखते हुए वाहन चालकों से भी आग्रह किया कि वे वाहन धीमी गति से चलाएं, जिससे सुबह और रात के समय सफाई कार्य में लगे कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके और दुर्घटनाओं से बचा जा सके। अभियान में पवन कुमार, अधिवक्ता नकिन मेहरा, शैलेन्द्र, कृष्ण प्रधान, सफाई निरीक्षक कृष्ण कुमार, सुपरवाइजर योगेश कुमार सहित अन्य कर्मचारी एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

- मेयर राजीव जैन के नेतृत्व में मामा भांजा चौक से महाराणा प्रताप चौक तक चला अभियान

भागवत कथा के श्रवण मात्र से खुल जाते हैं मोक्ष के द्वार : विधायक

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान विधायक निखिल मदान कथा व्यास से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सोनीपत। शनिवार को सेक्टर 14 कम्युनिटी सेंटर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में विधायक निखिल मदान बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे। विधायक निखिल मदान ने कहा कि सोनीपत शहर का इतिहास महाभारत काल से जुड़ा हुआ है और सोनीपत पौराणिक नगरी रही है। यहां के लोगों की धर्म के प्रति आस्था युगों युगों से चली आ रही है। यहां तक कि द्वापरयुग में भी भगवान श्री कृष्ण ने हरियाणा की भूमि को धर्मनगरी के रूप में चुना। विधायक निखिल मदान ने कहा कि भागवत कथा के श्रवण मात्र से ही प्राणी के मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं । हम सबको समय निकालकर ऐसे आयोजनों में भगवत कथा का श्रवण करना चाहिए। इस अवसर पर कथा व्यास पंडित हेम कुंज बंधु जी महाराज ने माला पहनाकर विधायक निखिल मदान को आशीर्वाद दिया। कथा व्यास ने श्रद्धालुओं को परीक्षित जन्मवृतांत, श्रीशुक्रदेव आगमन का प्रसंग सुनाकर भाव विभोर कर दिया। इसके बाद विधायक निखिल मदान ने अग्रसेन भवन सेक्टर 14 में चल रही भागवत कथा में भी भाग लिया और सभी श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विधायक निखिल मदान ने कथा व्यास आचार्य रोहित महाराज का आशीर्वाद लिया और समस्त श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर निगम पार्षद हरि प्रकाश सैनी, निगम पार्षद सुरेंद्र मदान, अनिता मदान, अमित सुखीजा, निखिता मदान, नेहा आर्या, टीका राम मित्तल आदि लोग मौजूद रहे।

मजबूत बूथ प्रबंधन ही जीत की कुंजी : कमल दिवान

सोनीपत। बैठक के दौरान मौजूद कांग्रेस नेता एवं अन्य।

- कमल दिवान ने कार्यकर्ताओं को दिया जीत का बूथ मंत्र
- नगर निगम चुनाव की तैयारियों में जुटी कांग्रेस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

बहालगढ़ रोड स्थित दिवान फार्म पर कांग्रेस की एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आगामी नगर निगम चुनावों के मद्देनजर बूथ प्रबंधन की रणनीति तैयार की गई। यह कार्यशाला हरियाणा कांग्रेस के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेटरी एवं सह-प्रभारी जितेंद्र बघेल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कार्यशाला में कांग्रेस के शहरी जिलाध्यक्ष कमल दिवान ने कहा कि किसी भी चुनाव में जीत का रास्ता मजबूत बूथ प्रबंधन से होकर गुजरता है। नगर निगम चुनाव में जीत सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने-अपने बूथ पर डटना होगा। हमें केवल चुनाव लड़ना नहीं है, बल्कि जनता के विश्वास को वोट में बदलना है। इसके लिए हर घर तक पहुंचना और कांग्रेस की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाना अनिवार्य है। सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को आपसी तालमेल बनाए रखने और एक-दूसरे के संपर्क में रहकर काम करने के कड़े निर्देश दिए। कमल दिवान ने कहा कि चुनाव के समय टीम वर्क ही सबसे बड़ा हथियार होता है। व्यक्तिगत मतभेदों को भुलाकर केवल पार्टी की मजबूती के लिए एकजुट होना होगा। कार्यशाला के दौरान उपस्थित नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि बूथ स्तर की कमेटियां जितनी सक्रिय होंगी, विपक्षी दलों की घेराबंदी उतनी ही आसान होगी।

मौके पर ये मौजूद रहे

इस मौके पर बूथ प्रबंधन टीम के सदस्य मुकेश पन्नालाल, कोऑर्डिनेटर बूथ मैनेजमेंट सोनीपत,अरुण सराफ, बसंत अहलावत डा. अनिल पंवार, शम्मी रती, राहुल और मौजूद रहे।

ग्रामीणों को आरडी और टीडी खातों की जानकारी दी

गोहाना। शिविर में ग्रामीणों के आधार कार्ड संबंधी कार्य करते हुए अधिकारी और कर्मचारी।

गोहाना। मदीना गांव में शनिवार को आधार कैंप व डाक चौपाल (डीसीडीपी) शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों को आधार कार्ड में सुधार संबंधी सेवाएं देने के साथ उनको डाक सेवाएं, एसएसए, आरडी और टीडी खातों के बारे में भी जानकारी दी गई। ग्रामीणों की सुविधा के लिए उपमंडल डाक अधिकारी विकास घणघस के गांव मदीना में यह शिविर सोनीपत डाकघर के मुख्य अधीक्षक राजकुमार वर्मा के निर्देश पर आयोजित किया गया। शिविर में 35 ग्रामीणों के आधार कार्ड में नाम, पता, जन्मतिथि और मोबाइल नंबर को अपडेट करने के साथ विभिन्न योजनाओं के 50 खाते खोले। उपमंडल डाक अधिकारी विकास घणघस ने बताया कि सुकन्या समृद्धि योजना बेटियों के लिए वरदान साबित हुई है। इस योजना से छोटी बचत से बच्चियों को आने वाले समय में बड़ा सहयोग मिलेगा। उनके अनुसार आरडी खाते से नागरिक 100 रुपए से अपनी मासिक बचत से शुरू कर सकते हैं। इस मौके पर सतीश, कुलदीप और महाबीर मौजूद रहे।

ग्रामीणों का आरोप, अधिकारी नहीं दे रहे गंभीर समस्या की तरफ ध्यान

पेयजल लाइन लीकेज से मकानों में दरारें, ग्रामीणों में रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की कथित लापरवाही के चलते गांव पीपली खेड़ा में गंभीर स्थिति बनती जा रही है। गांव की लंबा चौपाल के नजदीक बिछी पेयजल आपूर्ति लाइन में लगातार लीकेज होने के कारण आसपास स्थित कई मकानों की दीवारों में दरारें पड़ गई हैं। इससे ग्रामीणों में भय और आक्रोश दोनों व्याप्त हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि वे इस समस्या को लेकर संबंधित विभाग के अधिकारियों को कई बार अवगत करवा चुके हैं, लेकिन पिछले करीब 15 दिनों से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई, जिससे स्थिति और बिगड़ती जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि पेयजल आपूर्ति लाइन से लगातार रिस रहे पानी के कारण जमीन कमजोर हो गई है।

नमी बढ़ने से मकानों की नींव प्रभावित हो रही है और दीवारों में दरारें साफ दिखाई देने लगी हैं। इससे कभी भी बड़ा हादसा होने की आशंका बनी हुई है। ग्रामीणों ने विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि समय रहते लीकेज को ठीक नहीं किया गया तो मकानों को भारी नुकसान हो सकता है। ग्रामीण रोहतास, राजमल, रमन और दलबीर ने बताया कि उन्होंने जन स्वास्थ्य विभाग की ओर से केवल आश्वासन ही मिले हैं, जबकि धरातल पर कोई कार्य नहीं हुआ। ग्रामीणों ने कहा कि लगातार पानी बहने से न केवल मकानों को नुकसान पहुंच रहा है। ऐसी स्थिति में इसकी पूरी जिम्मेदारी संबंधित विभाग के अधिकारियों की होगी। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे मजबूर होकर उच्च अधिकारियों से शिकायत करने के साथ-साथ प्रदर्शन का रास्ता अपना सकते हैं।

गन्नौर। पेयजल आपूर्ति लाइन लीकेज ठीक ना होने पर रोष व्यक्त करते हुए ग्रामीण।

तीन दिन पहले ही दी थी शिकायत कल ही ठीक करवा देंगे : जेई

इस बारे में जन स्वास्थ्य विभाग के जे ई मंजीत यादव ने बताया कि पेयजल आपूर्ति लाइन लीकेज की सूचना ग्रामीणों ने तीन दिन पहले ही दी थी। मकान में दरार आने की उन्हें शिकायत नहीं मिली ऐसे हालात है तो वह कल ही ठीक करवा देंगे ।

बाल भवन में बाल वाटिका के छात्रों के लिए विशेष ग्रूमिंग सेशन

विशेष ग्रूमिंग सेशन में बाल वाटिका के छात्रों को संबोधित करते हुए ।

गन्नौर। बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल, गन्नौर में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए कक्षा बाल वाटिका–1 से बाल वाटिका–3 तक के छात्रों के लिए एक विशेष ग्रूमिंग सेशन का आयोजन किया गया। सत्र का उद्देश्य बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास, सकारात्मक व्यवहार, शिष्टाचार और प्रभावी संवाद कौशल को विकसित करना रहा। विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्वच्छता, समय प्रबंधन, बॉडी लैंग्वेज, आत्म-प्रस्तुति, सकारात्मक सोच और सामाजिक व्यवहार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सरल और रोचक तरीके से जानकारी दी। बच्चों की उम्र और समझ को ध्यान में रखते हुए सत्र को संवादात्मक गतिविधियों और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यार्थी पूरे उत्साह के साथ इसमें शामिल हुए और सीखने की प्रक्रिया को आनंदपूर्वक अपनाया। स्कूल के प्रधानाचार्य जय भारत गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल शैक्षणिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व और व्यवहारिक कौशल भी उतने ही आवश्यक हैं। इस प्रकार के ग्रूमिंग सेशन विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध होते हैं और उनमें आत्मविश्वास पैदा करते हैं।

क्रिसमस स्पेशल

सदियों से मनाया जा रहा प्रभु यीशु के जन्मोत्सव को समर्पित क्रिसमस का पर्व, अब किसी एक क्षेत्र या वर्ग का नहीं ग्लोबल फेस्टिवल बन चुका है। वैश्विक प्रेरणाओं, मानवीय मूल्यों और व्यक्तिगत संवेदनाओं के संगम से आज का क्रिसमस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम सिर्फ उत्सव न मनाएं बल्कि उत्सव बन जाएं। यही इस दौर के क्रिसमस की सबसे बड़ी और सबसे सकारात्मक उपलब्धि है।

{ कवर स्टोरी / आर. सी. शर्मा }

खुशी-उल्लास-उमंग का ग्लोबल फेस्टिवल क्रिसमस

क्रिसमस एक ऐसा पर्व है जो एक समय तक धार्मिक उत्सव के रूप में मनाया जाता था, लेकिन आज इक्कीसवीं सदी में यह वैश्विक संवेदना, मानवीय एकजुटता और सामूहिक खुशी का प्रतीक बन चुका है। बदलती तकनीक, तेज रफ्तार जीवनशैली, वैश्वीकरण और सामाजिक विविधताओं के बीच भी क्रिसमस का रोमांच कम नहीं हुआ बल्कि कई अर्थों में और गहरा हुआ है।

परंपरा-आधुनिकता का संगम

आज के दौर में क्रिसमस सिर्फ चर्च की घंटियों, कैरोल्स गाने या क्रिसमस ट्री सजाने तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक ऐसा अवसर बन चुका है, जहां परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। सोशल मीडिया पर फैली रोशनियां, डिजिटल ग्रीटिंग्स, वर्चुअल पार्टियां और ऑनलाइन गिफ्टिंग, इन सबने क्रिसमस को एक नए स्वरूप से सजा दिया है। जहां पहले क्रिसमस का अनुभव स्थानीय समुदाय तक सीमित रहता था, वहीं आज यह एक ग्लोबल इवेंट बन गया है। न्यूयॉर्क की सड़कों से लेकर टोक्यो, मुंबई और नैरोबी तक हर जगह क्रिसमस की सजावट, संगीत और उल्लास एक साझा भाव पैदा करता है।

खुशियों का नया एहसास

हाल के दशकों में क्रिसमस को लेकर हमारी भावनाओं में निश्चित ही बदलाव आया है। आधुनिक जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और अकेलापन बढ़ा है। ऐसे में क्रिसमस एक भावनात्मक विराम की तरह आता है, जहां लोग रुककर रिश्तों, यादों और मानवीय जुड़ाव को महत्व देते हैं। आज की खुशियां सिर्फ उपहारों तक सीमित नहीं रहीं। मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सुरक्षा और साथ होने की अनुभूति अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। क्रिसमस के समय परिवार या दोस्तों के साथ बैठकर खाना खाना, पुरानी यादें साझा करना या किसी जरूरतमंद की मदद करना, इन सबमें एक गहरी संतुष्टि छिपी है। यानी खुशी की मात्रा नहीं, लेकिन उसकी गुणवत्ता बदली है। यह अधिक संवेदनशील और अधिक मानवीय हुई है।

करुणा-साझेदारी की प्रेरणा

इक्कीसवीं सदी का क्रिसमस हमें कुछ बेहद महत्वपूर्ण वैश्विक प्रेरणाएं देता है। आज क्रिसमस के साथ चैरिटी, फूड डाइव्स, शेल्टर होम्स और ऑनलाइन फंड रेजिंग जुड़ चुके हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि सच्चा उत्सव तभी है, जब खुशियां दूसरों के संग बांटी जाएं। क्रिसमस अब सिर्फ ईसाइयों का पर्व नहीं रह गया। गैर-ईसाई समाज भी इसे एक मानवीय और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाता है, जो विविधता में एकता का संदेश देता है। युद्ध, संघर्ष और अस्थिरता के वर्तमान दौर में क्रिसमस का 'पीस ऑन अर्थ' वाला विचार, पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। यह हमें याद दिलाता है कि शांति कोई अमूर्त सपना नहीं बल्कि रोजमर्रा के छोटे व्यवहारों से भी संभव है।

महत्वपूर्ण है अर्थपूर्ण उत्सव

यह सच है कि आधुनिक क्रिसमस में बाजार का प्रभाव बढ़ा है- सेल्स, ऑफर्स और ब्रांडिंग हर जगह दिखती है। लेकिन इसके समानांतर एक नई सोच भी उभर रही है, मिनिमल और अर्थपूर्ण क्रिसमस। आज कई लोग 'कम खरीदो, बेहतर जियो' के विचार के साथ क्रिसमस मना रहे हैं। हैंडमेड गिफ्ट्स, अनुभव आधारित उपहार (जैसे समय देना, साथ घूमना) और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार सजावट। ये बदलाव बताते हैं कि खुशी की अतिरिक्त परतें दिखावे से नहीं, सार्थकता से आती हैं।

क्रिसमस मनाने के ऐतिहासिक-धार्मिक संदर्भ

क्रिसमस ईसाई धर्म का सबसे बड़ा पर्व है, जिसे यीशु मसीह के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है। ईसाई मान्यता के अनुसार यीशु का जन्म मानवता को पाप, हिंसा और अन्याय से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था। बाइबिल की कथा के अनुसार, यीशु का जन्म बेथलेहम में एक गौशाला में हुआ, जहां उनकी माता मरियम ने उन्हें जन्म दिया और यूसुफ उनके संरक्षक थे। यह कथा ईसाई धर्म में विनम्रता, त्याग और करुणा का मूल प्रतीक मानी जाती है। 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाने की परंपरा यीशु के जन्मदिन से जुड़ी है। इतिहासकारों के अनुसार चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य ने 25 दिसंबर को यीशु के जन्म दिवस के रूप में स्वीकार किया। इसका एक कारण यह भी था कि इसी समय रोम में 'सैटर्नेलिया' और 'सोल इन्विक्टस' जैसे सूर्य-उत्सव मनाए जाते थे। ईसाई धर्म के प्रसार के दौरान इन लोकप्रिय पर्वों को एक नए धार्मिक अर्थ के साथ जोड़ा गया, जिससे क्रिसमस व्यापक रूप से स्वीकार्य हो सका।

धार्मिक दृष्टि से क्रिसमस सिर्फ जन्मोत्सव नहीं बल्कि ईश्वर के प्रेम के अवतरण का प्रतीक है। ईसाई आस्था के अनुसार यीशु 'ईश्वर के पुत्र' हैं, जो मानव रूप में धरती पर आए ताकि प्रेम, क्षमा और दया का संदेश दे सकें। इसी कारण क्रिसमस के दौरान चर्चों में विशेष प्रार्थनाएं, मध्यरात्रि मिस्सा, कैरोल गायन और बाइबिल पाठ किए जाते हैं।

क्रिसमस सेलिब्रेशन से जुड़ी परंपराएं

क्रिसमस को पारंपरिक रूप से एक धार्मिक, पारिवारिक और सामुदायिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसकी तैयारियां एडवेंट काल से शुरू होती हैं, जो क्रिसमस से लगभग चार सप्ताह पहले आता है। इस दौरान लोग आत्मचिंतन, प्रार्थना और संयम पर ध्यान देते हैं। कई परिवार, घरों में एडवेंट कैंडल जलाते हैं, जो आशा और प्रकाश का प्रतीक मानी जाती है। घरों और चर्चों की सजावट, क्रिसमस की सबसे प्रमुख परंपरा है। क्रिसमस-ट्री सजाना भी इसका प्रमुख अंग है, जिसे रोशनी, सितारों, घंटियों और सजावटी गेंदों से सजाया जाता है। ट्री के ऊपर लगाया जाने वाला तारा बेथलेहम के उस तारे का प्रतीक है, जिसने तीन ज्ञानी पुरुषों को यीशु के जन्मस्थल तक पहुंचाया था। साथ ही कई स्थलों पर नैटिविटी सीन (यीशु के जन्म का दृश्य) लगाया जाता है। क्रिसमस ईव (24 दिसंबर की रात) को चर्चों में मिडनाइट मास होती है, जिसमें प्रार्थना, बाइबिल पाठ और सामूहिक कैरोल्स गाए जाते हैं। क्रिसमस के दिन परिवार और मित्र एक साथ मिलते हैं, विशेष भोज का आयोजन होता है और एक-दूसरे को उपहार दिए जाते हैं। बच्चों के लिए सांता क्लॉज की परिकल्पना खास आकर्षण होती है, जो उदारता और खुशी बांटने का प्रतीक है।

सकारात्मक प्रेरणाओं का उत्स

आज के संदर्भ में क्रिसमस हमें तीन सबसे सकारात्मक बातें सिखाता है।

उम्मीद: चाहे दुनिया कितनी भी अनिश्चित क्यों न हो, क्रिसमस उम्मीद का पर्व है। यह नए सिरे से शुरू करने की प्रेरणा देता है।

रिश्तों की प्राथमिकता: यह पर्व याद दिलाता है कि जीवन की असली पूंजी हमारे संबंध हैं, न कि भौतिक उपलब्धियां।

मानवीय गरिमा: क्रिसमस का मूल संदेश- प्रेम, क्षमा और करुणा, आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना सदियों पहले था। कहने का सार यही है कि इक्कीसवीं सदी में क्रिसमस फेस्टिवल का रोमांच बाहरी चमक से ज्यादा आंतरिक अर्थ में बसता है। हमारी खुशियां शायद अधिक सजावटी नहीं हुईं, लेकिन अधिक सजग जरूर हुई हैं। *

{ अमेजिंग / शिखर चंद जैन }

दुनिया के सबसे अनूठे क्रिसमस-ट्री

क्रिसमस के अवसर पर दुनिया भर में बेशुमार क्रिसमस ट्री सजाए जाते हैं। लेकिन कुछ क्रिसमस ट्री इतने अनूठे तरीके से सजाए जाते हैं कि उनकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां हम आपको दुनिया के कुछ ऐसे ही अमेजिंग क्रिसमस ट्री के बारे में बता रहे हैं।

क्रिसमस का उत्सव क्रिसमस-ट्री के बिना अधूरा है। वैसे तो क्रिसमस-ट्री वास्तव में पाइन, डगलस, बालसम या फर का पेड़ होता है। ये पेड़ सदा हरे-भरे रहते हैं इसलिए इन्हें सजावट के लिए चुना जाता है। लेकिन दुनिया भर में अलग-अलग चीजों के उपयोग से एक से बढ़कर एक कृत्रिम क्रिसमस-ट्री भी खूब बनाए और सजाए जाते हैं। आइए जानते हैं कुछ अनूठे क्रिसमस-ट्री के बारे में।

टंबलवीड ट्री यूएसए: चांडलर, संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना राज्य में मैरिकोपा काउंटी में स्थित एक शहर और फीनिक्स का एक उपनगर है। यह तकनीक और नवाचार का एक प्रमुख केंद्र है। यहां टंबलवीड-ट्री नामक प्रसिद्ध क्रिसमस-ट्री है, जिसे हर साल एक खास परंपरा के तहत बनाया जाता है। 1957 से चली आ रही इस परंपरा में हजारों टंबलवीड्स और रोशनी का उपयोग होता है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब आग लगने से शहर की क्रिसमस की सजावट नष्ट हो गई थी। तब लोगों ने इस अनूठे पेड़ का इस्तेमाल किया था। यह पारंपरिक क्रिसमस-ट्री की तरह नहीं है, बल्कि सूखी झाड़ियों (टंबलवीड्स) को इकट्ठा करके बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए लगभग 1,000 से अधिक टंबलवीड्स और 1,200 रंगीन बल्बों का उपयोग किया जाता है।

बिग क्रिसमस-ट्री इटली: यह दुनिया के सबसे अनूठे और सबसे ज्यादा लाइटों वाले क्रिसमस-ट्रीज में शामिल है। इटली के गुब्बीओ में माउंट इजिनो पर बना यह विशाल-ट्री 1981 से मौजूद है। यह दुनिया के सबसे बड़े क्रिसमस-ट्री के रूप में जाना जाता है, जिसे 1991 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था। यह माउंट इंगिनो की ढलान पर हजारों लाइटों और 7.5 किमी लंबे बिजली के तार से बना एक भव्य लाइट डेकोरेशन से बनता है, जो एक विशाल क्रिसमस-ट्री का आकार लेता है। इसकी ऊंचाई लगभग 750 मीटर और आधार पर चौड़ाई 450 मीटर होती है। इसे आमतौर पर 7 दिसंबर से 6 जनवरी तक सजाया जाता है। हर साल क्रिसमस के समय हजारों पर्यटक इसे देखने आते हैं।

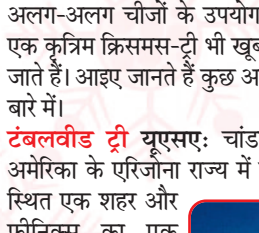

स्काई ट्री जापान: क्रिसमस के अवसर पर जापान के टोक्यो में कई प्रसिद्ध क्रिसमस ट्री और लाइट-अप शोज डेकोरेट किए जाते हैं, जिनमें टोक्यो स्काई-ट्री का विशालकाय क्रिसमस-ट्री भी शामिल है। टोक्यो स्टेशन के मारुनोउची क्षेत्र के पास किट्टे बिल्डिंग के बाहर जापान का यह सबसे बड़ा क्रिसमस-ट्री सजाया जाता है। यह 14 मीटर ऊंचा है। इसे आकर्षक रोशनी से सजाया गया है। यहां लगभग 500,000 बल्ब्स का शो आयोजित होता है, जो 'क्विंकल थ्री स्टार्स' और अन्य लाइट-अप थीम के साथ प्रदर्शित किया जाता है। किट्टे बिल्डिंग टोक्यो में सबसे ऊंची इमारत है, जो इसका प्रतीक चिन्ह भी बन गया है। इनके निकट ही स्थित ग्योको-डोरी स्ट्रीट और नाका-डोरी स्ट्रीट को भी उत्सव की रोशनी से सजाया जाता है। इसके अतिरिक्त क्रिसमस के अवसर पर यहां के ओमोतेसांडो, रोपोंगी और ओडेबा जैसे कई क्षेत्रों में सुंदर लाइटिंग डिस्प्ले आयोजित किए जाते हैं।

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री
यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री, 3 दिसंबर की शाम से ही आम लोगों के देखने के लिए अपनी सजधज के साथ रेडी हो जाता है। यह 75 फुट ऊंचा नॉर्वे स्प्रूस पेड़ है, जो ईस्ट ग्रीनबुश, न्यूयॉर्क से लाया गया है। इसे मैनहट्टन के मध्य में 30 रॉकफेलर प्लाजा में सजाया जाता है। यह 10 जनवरी तक देखने के लिए उपलब्ध रहता है। 2004 से स्थापित यह क्रिसमस ट्री 30,000 एलईडी लाइटों से रोशन होता है, जो सौर पैनलों से चलती हैं। 2007 से इस पर 550 पाउंड का स्वारोवस्की क्रिस्टल स्टार लगा हुआ है।

ओरिगामी क्रिसमस-ट्री यूएसए: न्यूयॉर्क का वर्ल्ड फेमस ओरिगामी क्रिसमस-ट्री, किसी भी दूसरे क्रिसमस-ट्री से अलग है। यह अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (एएमएनएच) में मौजूद है। यह लगभग 13 फीट लंबा पेड़, कागज से बने हुए जानवरों, जड़ी-बूटियों और अन्य आकृतियों से सजाया जाता है, जो ओरिगामी कलाकारों द्वारा बनाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के ओरिगामी रंगों में सजा यह पेड़ देखने में बहुत आकर्षक और बेहद रंगीन लगता है। *

{ कविता / हेमधर शर्मा }

कृतज्ञता और कृतघ्नता

जो देता है हम उसे देवता कहते हैं
फिर क्यों हरदम लेने की
इच्छा रखते हैं?
जड़ जिन्हें समझते हैं हम
पौधे-पेड़ सभी तो देते हैं
फिर याचक बनकर ही
खुश क्यों हम रहते हैं?
हो सकता है हों बुद्धिमान हम
दुनिया में सबसे ज्यादा
खुदगर्ज बनाए लेकिन जो
क्या बुद्धि उसी को कहते हैं?
लेता है कोई काम अगर
प्रतिदान नहीं देता है तो
अन्यायी उसे समझते हैं
फिर जड़-चेतन सबसे लेकर
मन में कृतज्ञ भी हो न सके
ऐसा कृतघ्न मानव बनकर
कैसे हम सब जी लेते हैं?

{ व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय }

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके।

कैमरों की चमकती चंचल चाहतें

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके। वह तो यह कैमरा ही है, जिसके आते ही तमाम बाराती नागिन हो जाते हैं और उनकी रूमाल से अपने आप ही बीन की धुनें निकलने लग जाती हैं। सोचता हूं, कहीं कल जंगल में मोर भी यह कहकर नाचने से इनकार न कर दें कि इधर कैमरे तो हैं ही नहीं। जब कोई फिल्म ही नहीं बना रहा, तो फिर जंगल में ऐसे नाच का आखिर फायदा भी क्या?

धरना, प्रदर्शन, अनशन, घेराव, रैली, भाषण, चुनाव, सबको कैमरे चाहिए। वह भी ऐसे-वैसे नहीं, समाचार चैनलों वाले। एक नहीं, अनेक। हर कोण से कवरेज जरूरी है। जिस काम को दुनिया न देखे, वह काम भी किस काम का? जिन्हें इन कैमरों से ज्यादा लगाव होता है, ऐसे साहसी लोग गुप्त कैमरों से भी भय नहीं खाते। यह जानते हुए कि जमाना स्टिंग ऑपरेशन का है और कभी भी धरे जा सकते हैं, वे तब भी अपना असली काम कर ही डालते हैं।

'आप कैमरे की नजर में हैं।' मैं जहां कहीं पर भी यह बोर्ड लगा देखता हूं, मुझे हंसी आने लगती है। ऐसे बोर्ड चोर को पकड़ने के लिए लगाए गए होते हैं कि उन्हें सहयोग करने के लिए कि यहां हरकत की, तो तू पकड़ा जा सकता है। जा, बिना कैमरे वाली जगह तलाश। मैं सोचता हूं, यदि चोर भी सीसीटीवी कैमरों से भयग्रस्त होकर अपना चौर्य-कर्म त्याग चुके होते, तो हम आए दिन चोरी की वारदात की खबरें पढ़ने, सुनने और देखने को तरस जाते। क्या पता, कैमरा उन्हें नया उत्साह देता हो। अब तो कैमरों को प्रोफेशनल फोटोग्राफरों की दरकार भी नहीं रही। सभी के हाथों में मोबाइल कैमरे हैं और सेल्फियों की चमकती हुई चंचल चाहतें। इसके एकनेत्री स्वरूप पर आज पूरा विश्व मोहित है। तभी तो, युद्ध हो या शांति, लोग अपनी आंखों से अधिक इन कैमरों की दिखलाई हुई चीजों पर विश्वास करने लगे हैं। *

{ लघुकथा / चंद्रप्रकाश डाले }

उपेक्षा के आंसू

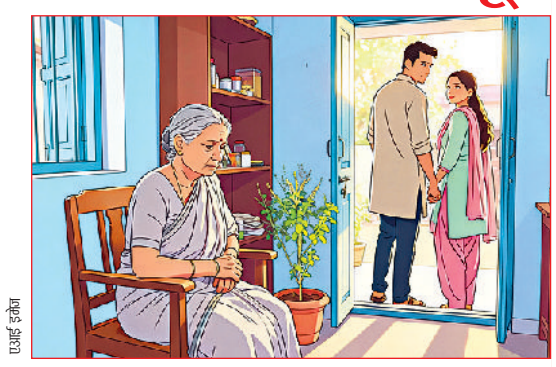

अस्पताल में चार दिनों से भर्ती सविता जी ने नर्स से पूछा, 'सिस्टर, मेरा बेटा आया था क्या?'

नर्स बोली, 'अरे माता जी, आप चार दिन से यही रट लगाए हैं कि बेटा आया है क्या, अरे आज तो आपकी छुट्टी होने वाली है।'

मां की आंखों में आंसू आ गए। रुंधे गले से बोलीं, 'मैं उसकी मां हूं ना। मैंने बड़ी तकलीफ, त्याग और तपस्या से उसको पाला है। इसलिए बार-बार उसके बारे में पूछती हूं। खैर, कोई बात नहीं।'

नर्स बोली, 'माता जी, बस आप तैयार हो जाइए, अस्पताल से छुट्टी मिल गई है, अब आपको घर जाना है, अपने बेटे के पास। आपके बिल वगैरह सब बन गए, उसका पेमेंट भी मिल चुका है।'

सविता ने फिर पूछा, 'मेरा बेटा लेने आया है क्या?'

'नहीं माता जी, ड्राइवर गाड़ी लेकर आया है।' नर्स ने बताया।

कुछ न कहकर, आंखों में आंसू छुपाते हुए सविता जी गाड़ी में बैठकर घर पहुंच गईं, लेकिन बेटे की उपेक्षा से खुद को थका हुआ और निराश महसूस कर रही थीं।

कुछ देर बाद ही बहू के मायके से फोन आया कि उसकी मां की तबियत खराब हो गई है। बहू ने तत्काल अपने पति को ऑफिस में फोन किया और बोली, 'आप तुरंत घर आ जाइए, मेरी मां की तबियत बहुत खराब है। और सुनो चार-पांच दिनों की छुट्टी भी ले लेना। मां को अस्पताल में भर्ती कराकर उनकी देखभाल के लिए वहां रुकना होगा।'

सासु मां की तबियत की खबर सुनकर सविता जी का बेटा तत्काल घर आ गया और जल्दी से तैयार होकर अपनी पत्नी के साथ ससुराल जाने लगा। दरवाजे से बाहर निकलते हुए जैसे उसे कुछ याद आया और वह पलटकर अपनी मां से बोला, 'मां, हम दोनों चार-पांच दिन के लिए जा रहे हैं। आप घर का ख्याल रखना।'

मां ने उन दोनों को जाते हुए देखा। मायूस होकर पास रखी कुर्सी पर बैठ गई। सोचने लगी, अस्पताल में भी वह अकेली थी, अब घर में भी अकेली है। साथ में थे तो सिर्फ आंसू। उपेक्षा से उपजे आंसू। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

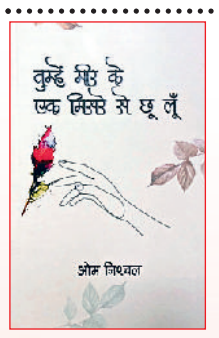

अंतस को छूते गीत

वरिष्ठ साहित्यकार ओम निश्चल के गीतों का नया संग्रह 'तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं' हाल में छपकर आया है। आज के दौर में जब छंदमुक्त कविताओं की बाढ़ आई हुई है, ऐसे में अत्यंत कोमलता को खुद में समेटे हुए, रुई के फाहे-से ये गीत हमारी रूह को हौले से छू लेते हैं। इन गीतों में खास तौर पर प्रेम के अनेक रंग तो पैबस्त हैं ही, इनके साथ ही जीवन की विडंबनाएं, अलग-अलग ऋतुओं का सौंदर्य, खेती-किसानी, मिट्टी का सोंधापन, सांस्कृतिक नगरों की छटा, पारंपरिक पर्वों की आभा, ईश्वर के प्रति अहैतुक आस्था और कुछ अनकहे से रिश्तों की खुश्बू को भी शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। गीतों के रचाव और शब्दों के चयन में ओम जी प्रयोगधर्मी रहे हैं, किसी भाषा को लेकर उनकी रचनात्मकता में कोई हठधर्मिता नहीं दिखती है। इसके साथ ही वे पढ़ने वाले के अंतस में भावनाओं का अप्रतिम प्रतिसंसार भी रचते चलते हैं। इसकी बानगी संग्रह के कई गीतों में देखी जा सकती है। अतीत में घटित प्रेम को बेहद मार्मिकता से वे शब्दों में पिरोते हुए कहते हैं, *'पलकें बोझिल और उनींदी रातें होती थीं/बरसों पहले तुमसे कितनी बातें होती थीं।'* तो कहीं जीवन की क्रूरता के समक्ष विवश मन कराह उठता है, *'प्रार्थना में फूल, मन में अर्घ्य देकर/लौट आए डबडबाई आंख लेकर।'* कहीं अपने आराध्य प्रभु की भक्ति में गीतकार का मन पुलकित होकर गा उठता है, *'दीप घर-घर जले हैं अवध में पिया/आज लौटे अयोध्या में रघुवर-सिया।'* तो कहीं प्राचीन नगर के सांस्कृतिक वैभव को देखकर वे अंतस के उल्लास को व्यक्त करने से रोक नहीं पाते, *'काशी के घाट निराले, रे भैया/काशी के घाट निराले।'* और प्रेम मिलन को व्यक्त करती ये पंक्तियां तो बेमिसाल हैं, *'पलकों को होठों की धड़कन से छू लूं/सुनाऊं गजल कोई गालिब की तुमको/तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं।'* *

पुस्तकः तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं (गीत-संग्रह), रचनाकारः ओम निश्चल, मूल्यः 300 रुपए, प्रकाशकः हिंदी अकादमी, दिल्ली

हरिभूमि
रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 21 दिसंबर 2025

अवसर जब क्रिसमस का हो तो केक का जिक्र होता ही है। घर-घर में इसे बनाया और फ्रेंड्स-रिलेटिव्स के संग एंज्वॉय भी किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केक बनाने की शुरुआत कब हुई? इसका आकार, स्वाद कैसे बदला? जानिए, केक से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

टेस्टी केक से जुड़ी अनूठी-रोचक बातें

रोचक / शिखर चंद जैन

बच्चे ही नहीं, बड़ी उम्र के भी अधिकांश लोगों को केक खाना पसंद होता है। किसी का बर्थडे हो या मैरिज एनिवर्सरी या कोई और सेलिब्रेशन, खुशी और जश्न के खास मौकों पर केक कट कर खिलाने का चलन है। केक खाने में जितने यमी होते हैं, उतनी ही दिलचस्प इससे जुड़ी कुछ बातें भी हैं। इनके बारे में यहां बता रहे हैं।

कैसा था शुरुआती केक: शुरुआती दौर में बनने वाले केक आज की तरह सॉफ्ट, डिजाइनर और अट्रैक्टिव नहीं होते थे। ये अनाज के बने हुए सघन और चपटे (डेंस और फ्लैट) होते थे। इन्हें पीसे हुए अनाजों में खमीर (यीस्ट) उठाकर बनाया जाता था। फिर इन्हें सुखाकर जमाया जाता था। आज हम जिस तरह के केक का आनंद लेते हैं, उनसे मिलते-जुलते केक 18वीं-19वीं शताब्दी में बनने शुरू हुए।

ऐसे हुई क्रिसमस केक की शुरुआत: रोम में शुरुआती दौर में क्रिसमस के अवसर पर मीठी रोटियां बनाई जाती थीं। मध्यकाल तक आते-आते इन मीठी रोटियों का स्थान प्लम-पॉरिज (आलू बुखारा, ओट्स, फ्रूट्स, ड्राय फ्रूट्स आदि मिलाकर बनाया गया दलिया) ने ले लिया। 16वीं सदी तक आटे, अंडे, मक्खन से प्लम केक बनने शुरू हो गए। इसे 'ट्वेल्थ नाइट केक' कहा जाता था। धीरे-धीरे ये ट्वेल्थ नाइट केक, क्रिसमस के उत्सव का एक अभिन्न हिस्सा बन गए। आज क्रिसमस के अवसर पर हम जो 'फ्रूट केक' या 'आइस्ड केक' खाते हैं, वह इसी ट्वेल्थ नाइट केक का अपडेटेड वर्जन है।

केक पर सर्वाधिक कैंडल्स जलाने का रिकॉर्ड: क्या आप जानते हैं कि बर्थडे केक पर सबसे अधिक कैंडल्स जलाने का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड भी है? जन्मदिन के केक पर सबसे ज्यादा मोमबत्तियां जलाने का विश्व रिकॉर्ड 2016 में आश्रिता फुरमान और न्यूयॉर्क स्थित श्री चिन्मय केंद्र ने बनाया था, जब केक पर 72,585 मोमबत्तियां जलाई गई थीं। यह केक ध्यान गुरु श्री चिन्मय के 85वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में बनाया गया था। श्री चिन्मय केंद्र के 100 सदस्यों ने मिलकर यह अनोखा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था।

बर्थडे पर केक काटने की शुरुआत: जन्मदिन के अवसर पर दुनिया के अधिकांश देशों में केक काटा जाता है, खाया-खिलाया जाता है। माना जाता है कि 16वीं-17वीं सदी में जर्मनी में पहली बार छोटे बच्चों का जन्मदिन मनाने के लिए केक बनाना शुरू किया गया। इस केक को 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। ये केक दिखने में आज के केक से काफी मिलते-जुलते होते थे। फिर धीरे-धीरे केक बर्थडे सेलिब्रेशन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता गया।

पॉपुलर केक फ्लेवर्स: जन्मदिन के केक की बात करें तो ज्यादातर लोगों के लिए चॉकलेट सबसे पसंदीदा फ्लेवर होता है, उसके बाद नंबर आता है वनीला फ्लेवर का। जर्मन चॉकलेट केक दुनिया के सबसे मशहूर केक्स में से एक है। इंटरेस्टिंग बात यह है कि 'जर्मन चॉकलेट केक' की उत्पत्ति जर्मनी में नहीं हुई थी। दरअसल, इसका संबंध सैमुअल जर्मन नामक एक अमेरिकी व्यक्ति से था, जिन्होंने 1852 में एक डार्क बेकिंग चॉकलेट बनाई थी। इसे 'जर्मन्स स्वीट चॉकलेट' के नाम से जाना जाता था। 1957 में इस रेसिपी का इस्तेमाल केक बनाने में किया गया और 'जर्मन्स चॉकलेट केक' शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। तब से इसे इसी नाम से जाना जाता है। *

केक से रिलेटेड कुछ इंटरेस्टिंग फैक्ट्स

- दुनिया का सबसे महंगा केक 'पाइरेट्स फैंटेसी' था जिसकी कीमत लगभग 35 मिलियन डॉलर थी।

- शिकागो के पैट्रिक बर्टोलेटी 'डीप डिश' ने 2012 में छह मिनट में 72 कप केक खाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।
- कप केक की रेसिपी गूगल पर सबसे ज्यादा सर्च की जाने वाली रेसिपीज में से एक है।
- दुनिया का सबसे ऊंचा केक बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के कुछ स्कूली बच्चों के नाम है। 33 मीटर (108.27 फीट) ऊंचे इस केक को हाकासिमा-निलासरी कलिनरी स्कूल के बच्चों ने क्रिसमस के अवसर पर बनाया था।
- पुराने जमाने में इंग्लैंड में मान्यता थी कि तकिए के नीचे 'फ्रूट केक' रखकर सोने से सुंदर पति मिलता है। इसे 'ड्रीमिंग केक' भी कहा जाता था।

पहला मैरिज फंक्शन केक

आजकल शादियों में भी केक काटने का ट्रेंड बढ़ने लगा है। यह परंपरा कब से शुरू हुई, यह तो पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता, मगर पहले विवाह केक का उल्लेख 1858 में मिलता है। यह ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया की सबसे बड़ी बेटी (उसका नाम भी विक्टोरिया था) के मैरिज फंक्शन के लिए बनाया गया था। प्रिंसेस विक्टोरिया का विवाह केक तीन गज चौड़ा और 300 पाउंड वजन का था, लेकिन वह सिर्फ एक मंजिला था। उनकी शादी के केक पर सफेद आइसिंग का पहली बार इस्तेमाल किया गया था। तभी से इस तरह की आइसिंग को 'रॉयल आइसिंग' के नाम से जाना जाता है।

हम जो चाहते हैं, हमेशा वैसा ही हो, यह हमारे हाथ में नहीं है। लेकिन खुश रहना हमारे हाथ में है। कुछ छोटी-छोटी बातों और आदतों को अगर हम अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो यकीन मानिए, हम हमेशा खुश रह सकते हैं। ऐसी ही कुछ काम की बातों के बारे में जानिए।

अपना लें ये आदतें हमेशा रहेंगे खुश

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

किसी ने कितनी सही बात कही है, 'अपने दुःखों को भगाने का एक ही रास्ता है, खुश रहना।' सब खुश रहना चाहते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि खुशियों को अपने दामन में समेट कर कैसे रखा जाए? डॉ. ए. शिंडलर के अनुसार, 'दुःख ही सभी मनोदैहिक रोगों का एकमात्र कारण है और खुशी ही एकमात्र उपचार है।' डिजीज शब्द का अर्थ ही दुःख की अवस्था है। डिज-ईज यानी आराम से न रहना। दरअसल, खुशी एक मानसिक स्थिति है, जो काफी हद तक हमारी आदतो पर निर्भर करती है।

क्या है हैप्पी-ओलॉजी: विशेषज्ञों का मानना है कि खुशी हासिल करने का एक वैज्ञानिक नजरिया भी होता है और हर कोई अपने दैनिक जीवन में खुश होने के लिए छोटे-छोटे कारण ढूंढ़ सकता है। इसे ही 'हैप्पी-ओलॉजी' कहते हैं। इसके मुताबिक किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से खुश या संतुष्ट होना आपके ऊपर निर्भर करता है। आप चाहें तो किसी बात से चिढ़कर गुस्सा या उदास हो सकते हैं और आप चाहें तो इन नकारात्मक भावनाओं से ऊपर उठकर खुद को खुश रख सकते हैं, यानी खुश रहना हमारे हाथ में है। सुविख्यात लेखक एवं विद्वान डेल कार्नेगी ने भी कहा है, 'प्रसन्नता बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती, वह हमारे मानसिक दृष्टिकोण से संचालित होती है।' विलियम जेम्स ने कहा है, 'हम इसलिए नहीं हंसते कि हम खुश हैं, बल्कि हम इसलिए खुश हैं कि हम हंसते हैं।'

खोज लीजिए अपना हैप्पियोलॉजिस्ट: व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, आप खुद अपना हैप्पियोलॉजिस्ट खोज सकते हैं। अपने इर्द-गिर्द एक ऐसे इंसान को ढूंढ़ निकालें, जो आपके हिसाब से सदा खुश रहता है और उसे अपना आदर्श यानी हैप्पियोलॉजिस्ट बना लें। आप देखेंगे कि ये लोग जरा-जरा सी बातों में ही बच्चों की तरह खुश हो जाते हैं और खिलखिलाकर हंसने लगते हैं। ये खुशी हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करती है। कोई चाहे तो 10 रुपए की ऑरेंज आइसक्रीम खाकर खुश और संतुष्ट हो सकता है, वहीं आदतन दुःखी रहने वाला इंसान 100-150 की ब्रांडेड आइसक्रीम खाकर भी दुःखी ही नजर आएगा और उसके स्वाद में कोई न कोई नुक्स ढूंढ़ निकालेगा।

छोटी-छोटी चीजों में खोज लें खुशी: वैज्ञानिकों ने अपनी स्टडीज में पाया है कि खुश होने के लिए आप बड़ी चीजों का इंतजार न करें, छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढ़ें। मिरियम लीगलर ने अपनी पुस्तक 'फाइंडिंग योर इनर हैप्पियोलॉजी' में लिखा है, 'हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत-सी सामान्य चीजें ऐसी हैं, जिनसे हम खुशी महसूस कर सकते हैं। बस इन चीजों के प्रति हमारा नजरिया ऐसा होना चाहिए।'

ठान लें कि खुश रहना है: वाल्टेयर ने कहा है, 'मैंने खुश रहना चुना, क्योंकि यह मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।' इस संबंध में अब्राहम लिंकन की बात भी बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था, 'अधिकांश लोग लगभग उतने ही खुश होते हैं, जितना खुश रहने का वे मन बनाते हैं।'

हैप्पियोलॉजिस्ट सुजाना हैलोनेस किसी समय एक दुःखी और निराश इंसान थीं। उन्हें अपनी जिंदगी और जॉब से बेशुमार शिकायतें थी। एक दिन अचानक उन्होंने खुद को बदल डाला। अब वे हैप्पीनेस के प्रोजेक्ट पर काम करती हैं और बेहद खुश रहती हैं।

खुशी से मिलेगी सफलता: सुजाना हैलोनेस अपनी वेबसाइट पर लिखती हैं, 'मैंने सीख लिया कि सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि खुशी से सफलता मिलती है।' खुश रहने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही हमारी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी भी बढ़ती है। लोगों के साथ रिश्ते भी इंप्रूव होते हैं। जाहिर है, खुशी सफलता का माध्यम बन जाती है। सुजाना कहती हैं, 'खुशी एक अभ्यास है, मंजिल नहीं।'

मुस्कुराइए-हंसिए हर रोज: ब्रिटेन के हिप्नोटिस्ट और व्यवहार विज्ञानी पॉल मैकेना ने अपनी किताब 'आइ कैन मेक यू हैप्पी' में लिखा है कि रोज 20 बार हंसें और 20 बार मुस्कुराएं। भले ही आपको ऐसा जबरन करना पड़े। मुस्कुराने और हंसने से आपके शरीर में सेरोटोनिन रिलीज होता है, जो एक फील गुड हॉर्मोन है। कुछ दिनों बाद आप खुश रहने के अभ्यस्त हो जाएंगे। *

इसलिए कहते हैं मैरी क्रिसमस!

जानकारी / अलका 'सोनी'

क्रिसमस का त्योहार लगभग पूरी दुनिया में मनाया जाता है। सभी देश अपने-अपने तरीके से इसे मनाते हैं। इसे मनाने का तरीका चाहे जो भी हो, एक बात जो हर जगह कॉमन होती है वह है क्रिसमस की शुभकामनाएं एक-दूसरे को देते हुए 'मैरी क्रिसमस' बोलना। अन्य मौकों पर, चाहे वो न्यू ईयर हो या फिर होली, दीवाली जैसे त्योहार। लोग एक-दूसरे को 'हैप्पी' बोलकर शुभकामनाएं देते हैं, जैसे- 'हैप्पी न्यू ईयर', 'हैप्पी दिवाली' आदि। लेकिन क्रिसमस के लिए बोलते हैं- मैरी क्रिसमस।

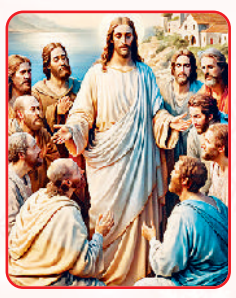

कैसे हुई 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत: क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत को लेकर कई संदर्भ मिलते हैं। सन 1534 में लंदन के बिशप जॉन फिशर ने क्रिसमस के मौके पर हेनरी अष्टम के प्रमुख मंत्री थॉमस क्रोमवेल को पत्र लिखकर 'मैरी क्रिसमस' विश किया था। इसके अलावा मैरी क्रिसमस बोलने का उल्लेख 1843 में लिखे गए चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास 'ए क्रिसमस कैरोल' में भी किया गया है।

मदर मैरी के सम्मान में: ईसा मसीह की मां 'मरियम' ईसाई धर्म में बहुत सम्मानित मानी जाती हैं। उन्हें सभी ईसाइयों की माता और मानव जाति में सर्वोच्च इंसान माना जाता है। मरियम को 'मैरी' नाम से भी जाना जाता है। इसलिए एक मान्यता यह भी है कि मदर मैरी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 'हैप्पी क्रिसमस' के स्थान पर 'मैरी क्रिसमस' बोलकर क्रिसमस विश किया जाता है।

मतलब है समान: 'मैरी' शब्द का अर्थ हर्षित, आनंदित या उल्लासपूर्ण होता है। यह शब्द अकसर उत्सव और खुशी के अवसरों के साथ जुड़ा होता है। 'हैप्पी' का अर्थ होता है 'खुश' या 'संतुष्ट'। कुछ भाषाविदों का मानना है कि 'हैप्पी' व्यक्तिगत खुशी पर जोर देता है, जबकि 'मैरी' सामूहिक और सांस्कृतिक उत्सव की खुशियों को व्यक्त करता है। क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी' शब्द इसलिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह उत्सव और उल्लास के सामूहिक अभिव्यक्ति को बेहतर ढंग से प्रकट करता है। बहरहाल, मैरी या हैप्पी दोनों ही शब्दों का प्रयोग खुशी जाहिर करने के लिए ही किया जाता है। इसलिए आप इनमें से कुछ भी बोलकर विश कर सकते हैं। *

गणित को समृद्ध करने वाले भारत के महान गणितज्ञ

भारत में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक गणित के प्रकांड ज्ञानी हुए हैं। राष्ट्रीय गणित दिवस (22 दिसंबर) के अवसर पर हम आपको कुछ महान भारतीय गणितज्ञों के बारे में बता रहे हैं।

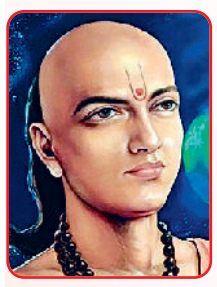

आर्यभट्ट

श्रीनिवास रामानुजन

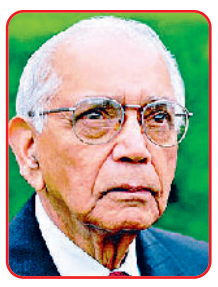

सी. आर. राव

विभूतियां / नेहा जैन

यह हम भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि भारत के विद्वानों ने दुनिया को गणित के महत्वपूर्ण, मूलभूत सिद्धांतों और नियमों की जानकारी दी। 400 ई. से 1500 ई. के बीच के काल को भारतीय गणित का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में भारतीय गणितज्ञों ने कई नए गणितीय सिद्धांत दिए। भारतीय गणितज्ञों को कालखंड के हिसाब से मुख्यतया दो भागों में बांटा जा सकता है-पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञ और आधुनिक भारत के गणितज्ञ। पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञों में शामिल कुछ प्रमुख हस्तियां हैं-

आर्यभट्ट (476-550 ईस्वी): इन्हें भारतीय गणित का पिता माना जाता है। आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' के माध्यम से गणितीय सोच में क्रांति ला दी। उन्होंने ही स्थानीय मान प्रणाली, शून्य की अवधारणा और त्रिकोणमितीय कार्यों के प्रारंभिक रूपों को प्रस्तुत किया। आर्यभट्ट ने ही 'पाई' के मूल्य की सटीक गणना की, बीजीय समीकरणों के समाधान प्रस्तावित किए और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने की व्याख्या की। यह अवधारणा अपने समय से बहुत आगे थी।

ब्रह्मगुप्त (598-668 ईस्वी): शून्य को एक संख्या के रूप में मानने और उसके लिए नियम स्थापित करने वाले ब्रह्मगुप्त पहले व्यक्ति थे। इसके अलावा, उन्हें द्विघात समीकरण का पहला स्पष्ट विवरण देने और गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षक बल के रूप में वर्णित करने के लिए जाना जाता है। 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' और 'खंडखाद्यक' उनकी दो सबसे प्रसिद्ध कृतियां हैं।

शकुंतला देवी

भास्कर प्रथम (600-680 ईस्वी): इन्होंने संख्याओं को लिखने के लिए हिंदू और अरबी दशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले किया था। 'आर्यभटीय' पर उनका विश्लेषणात्मक कार्य, 'आर्यभटीय भाष्य', खगोल विज्ञान और गणित पर सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ माना जाता है। उन्हें स्थानीय मान के अनुसार संख्याओं के निरूपण के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

भास्कर द्वितीय (1114-1185 ईस्वी): इन्होंने नक्षत्र वर्ष की लंबाई और चंद्रमा के समीकरण जैसी कई खगोलीय राशियों को परिभाषित किया था। अवकल कलन (डिफरेंशियल कैलकुलस) के सिद्धांतों की खोज, दशमलव प्रणाली का व्यवस्थित उपयोग भी इनकी देन है। इन्होंने ज्यामिति और बीजगणित से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों- 'लीलावती' और 'बीजगणिताध्याय' की रचना की।

संगमग्राम के माधव (1340-1425 ईस्वी): यूरोपीय 'कैलकुलस' से सदियों पहले इन्होंने त्रिकोणमितीय श्रंखला विस्तार और घात श्रंखला की खोज की और सूर्यकेंद्रित मॉडल (हीलियोसेंट्रिक मॉडल) जैसे महत्वपूर्ण ग्रहों की गति के मॉडल विकसित किए, जिससे खगोलीय गणनाओं में क्रांति आ गई। इस प्रतिभाशाली गणितज्ञ को साइन और कोसाइन जैसे त्रिकोणमितीय फलनों के लिए अनंत श्रेणी विस्तारों में उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है।

आधुनिक भारत के प्रमुख गणितज्ञों में शामिल हैं-

श्रीनिवास रामानुजन (1887-1920): रामानुजन की स्मृति में ही गणित दिवस मनाया जाता है। इन्होंने संख्या सिद्धांत, गणितीय विश्लेषण आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया। विभाजन फलन, सतत भिन्न और अनंत श्रेणी जैसे क्षेत्रों में उनकी उत्कृष्ट खोजों ने 20वीं सदी में गणित के विकास को बहुत प्रभावित किया। उन्हें अपने समय में आधुनिक विश्व का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता था।

पी.सी. महालनोबिस (1893-1972 ईस्वी): महालनोबिस दूरी और फ्रैक्टाइल ग्राफिकल विश्लेषण इनके कुछ प्रमुख योगदान हैं।

सी. आर. राव (1920-2023): भारतीय-अमेरिकी गणितज्ञ और सांख्यिकीविद् सी. आर. राव का सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, आनुवंशिकी और चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शकुंतला देवी (1929-2013): शकुंतला देवी को मानव-कंप्यूटर के नाम से जाना जाता था। वे कैलकुलेटर की सहायता के बिना अपनी त्वरित मानसिक गणनाओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं। त्वरित मानसिक गणना के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल है। *

फिल्मों में क्रिश्चियन कैरेक्टर्स क्रिसमस सेलिब्रेशन

सिने ट्रेंड / अशोक वाधवाणी

कई हिंदी फिल्मों में क्रिश्चियन परिवेश, पात्रों और गीतों को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया जाता रहा है। कुछ फिल्में क्रिसमस सेलिब्रेशन से भी जुड़ी रही हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

क्रिसमस, ईसाई धर्मावलंबियों का प्रमुख त्योहार है, जो भारत सहित विश्व भर में 25 दिसंबर को मनाया जाता है। इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं। बीते दौर से लेकर हाल के वर्षों तक हिंदी में ऐसी कई सारी फिल्में बनती रही हैं, जिनमें क्रिसमस सेलिब्रेशन का जिक्र आया, उससे जुड़े गीत फिल्माए गए, मुख्य पात्र या फिर पूरी कहानी ईसाई समुदाय के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। कई फिल्मों में तो ऐसे ईसाई पात्र दिखाए गए जो सिनेप्रेमियों के जेहन में आज भी दर्ज हैं।

ईसाई पात्र-परिवेश की कहानी: शोमैन राज कपूर ने ईसाई लड़की 'बॉबी' की कहानी पर फिल्म बनाई, जो हिट रही। 1973 में आई फिल्म 'बॉबी' में डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। हिंदू लड़के और क्रिश्चियन लड़की की इस जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। आगे चलकर, साल 1985 में इन्हीं डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर को लेकर रमेश सिप्पी ने फिल्म 'सागर' बनाई। यह डिंपल कपाड़िया की कम-बैक फिल्म थी, जिसमें उन्होंने एक क्रिश्चियन लड़की मोना डी सिल्वा की भूमिका अदा की थी।

साल 1975 में आई फिल्म 'जूली' में एक्ट्रेस लक्ष्मी ने क्रिश्चयन लड़की जूली का लीड रोल प्ले किया था। साथ ही फिल्म के अन्य प्रमुख पात्र भी ईसाई धर्म से संबंध रखने वाले ही थे। इसी नाम से साल 2004 में एक बोल्ड फिल्म बनाई गई, जिसमें नेहा धूपिया ने गोवा में रहने वाली लड़की 'जूली' का रोल किया था। संजीव कुमार की फिल्म 'देवता' (1978) और 'चेहरे पे चेहरा' (1981) की कहानी ईसाई समाज और ईसाई पात्रों के ईर्द-गिर्द घूमती है।

नाना पाटेकर, मनीषा कोईराला और सलमान खान की फिल्म 'खामोशी : द म्यूजिकल' (1996) भी एक क्रिश्चियन परिवार के इर्द-गिर्द बुनी गई प्रेम कहानी है। इसके अलावा शबाना आजमी, मार्क रॉबिंसन, इरफान खान अभिनीत 'बड़ा दिन' (1998), और 'मैरी क्रिसमस' (2024) फिल्मों का नाम क्रिसमस फेस्टिवल पर रखा गया है। इन फिल्मों में इस धर्म-संस्कृति से जुड़े रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि को भी बखूबी दर्शाया गया है।

यादगार पादरी के किरदार: ईसाई धर्मगुरु यानी पादरी को विशेष आदर, मान-सम्मान दिया जाता है। कई हिंदी फिल्मों में पादरी का कैरेक्टर निभाने वाले आर्टिस्ट्स को खूब सराहना मिली। 'दोस्त' (अभि भट्टाचार्य), 'अमर अकबर एंथोनी' (नाजिर हुसैन), 'तहलका' (जीतेंद्र), 'हत्या' (सत्येन कप्पू), 'खोज' (डैनी), 'देवता' (श्रीराम लागू) आदि कई फिल्में बनी हैं, जिनमें पादरियों के महत्वपूर्ण और यादगार रोल रहे।

कुछ पॉपुलर क्रिश्चियन कैरेक्टर: कई ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें ईसाई कैरेक्टर या सहायक पात्र लोगों को खूब पसंद आए। 'अनाड़ी' में ललिता पवार का अपनी फिल्मी इमेज के विपरीत सहृदय ईसाई महिला मिसेज एल डीसा का अविस्मरणीय रोल था। ऐसे ही फिल्म 'गैंबलर' में जाहिरा, 'मेरा नाम जोकर' में सिमी ग्रेवाल, 'वो मैं नहीं' में आशा सचदेव, 'मजबूर' में प्राण, 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' में नसीरुद्दीन शाह, 'जाने भी दो यारों' में सतीश शाह और 'अमर अकबर एंथोनी' में अमिताभ बच्चन द्वारा निभाया गया एंथोनी का कैरेक्टर लोग आज भी नहीं भूल पाए हैं।

गोवा में फिल्माई गई फिल्में: जब भी भारत में ईसाई परिवेश की बात होती है, गोवा का नाम सबसे पहले याद आता है। बॉलीवुड में ऐसी कई फिल्में बनीं, जिनकी अधिकतर शूटिंग गोवा में हुई। 'जोहर महमूद इन गोवा' (1965) में आई एस. जोहर और महमूद मुख्य भूमिका में थे। अमिताभ बच्चन की 'सात हिंदुस्तानी' (1969) और 'पुकार' (1983) इन तीनों फिल्मों की कहानी गोवा मुक्ति संग्राम पर आधारित थी। शाहरुख खान, सुचित्रा कृष्णमूर्ती अभिनीत 'कभी हां कभी ना' (1994) और शाहरुख खान, चंद्रचूड़ सिंह, ऐश्वर्या राय की फिल्म 'जोश' (2000) के मुख्य पात्र ईसाई ही थे। दोनों फिल्में गोवा में शूट की गईं। ऐसे ही दीपिका पादुकोण की फिल्म 'फाइंडिंग फैनी' (2014) गोवा में शूट हुई थी। इस फिल्म के सभी मुख्य पात्र ईसाई हैं। 'गो-गोवा-गॉन' (2013) गोवा में शूट की गई अलग टाइप की कॉमेडी, थ्रिलर है, जिसमें सैफ अली खान, कुणाल खेमू, पूजा गुप्ता आदि मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म के मुख्य पात्र भी क्रिश्चियन ही हैं। गोवा में शूट की गई अधिकतर फिल्मों में वहां के चर्च, बीच, ईसाई समुदाय के लोगों की जीवनशैली और संस्कृति को खूबसूरती से फिल्माया जाता रहा है। *

'अमर अकबर एंथोनी' में एंथोनी गोंसाल्वेस के रोल में अमिताभ

कई गीत भी हुए पॉपुलर

बॉलीवुड फिल्मों में ऐसे कई गाने भी बने हैं, जो पूरी तरह क्रिसमस से जुड़े हैं। इनमें से कुछ पॉपुलर भी हुए हैं। 'बचपन' फिल्म का गीत 'मदर मैरी, मां हम तेरे दुलारे हैं' प्रेयर है। 'शानदार' में संजीव कुमार सांता क्लॉज की वेशभूषा में गाते हैं, 'आता है, आता है, सांता क्लॉज आता है', 'जख्मी' में 'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल द वे।' कई गीत ऐसे भी रचे हैं, जिनको सुनते ही समझ आ जाता है कि ये गीत या इसके पात्र ईसाई धर्म से जुड़े हुए हैं। फिल्म 'जमीर' में शम्मी कपूर पर फिल्माया गया गीत 'बड़े दिनों में खुशी का दिल आया...'। 'जूली' में प्रीती सागर की आवाज में अंग्रेजी गाना है, 'माइ हार्ट इज बीटिंग', 'जीते हैं शान से' में 'जूली-जूली जॉनी का दिल तुम पर आया जूली।' गाने में मिथुन चक्रवर्ती अपना प्रेम प्रकट करते हैं। 'सागर' में 'ओ मारिया, ओ मारिया' गाने में कमल हासन, डिंपल कपाड़िया की मस्ती देखने लायक है। 'देवता' का हटकर लिखा गाना है, 'चल बैठें चर्च के पीछे'। ये सभी गाने आज भी लोकप्रिय हैं।